मार्च - २०१० किंमत रु.५

श्री स्वामिनारायण

मासिक

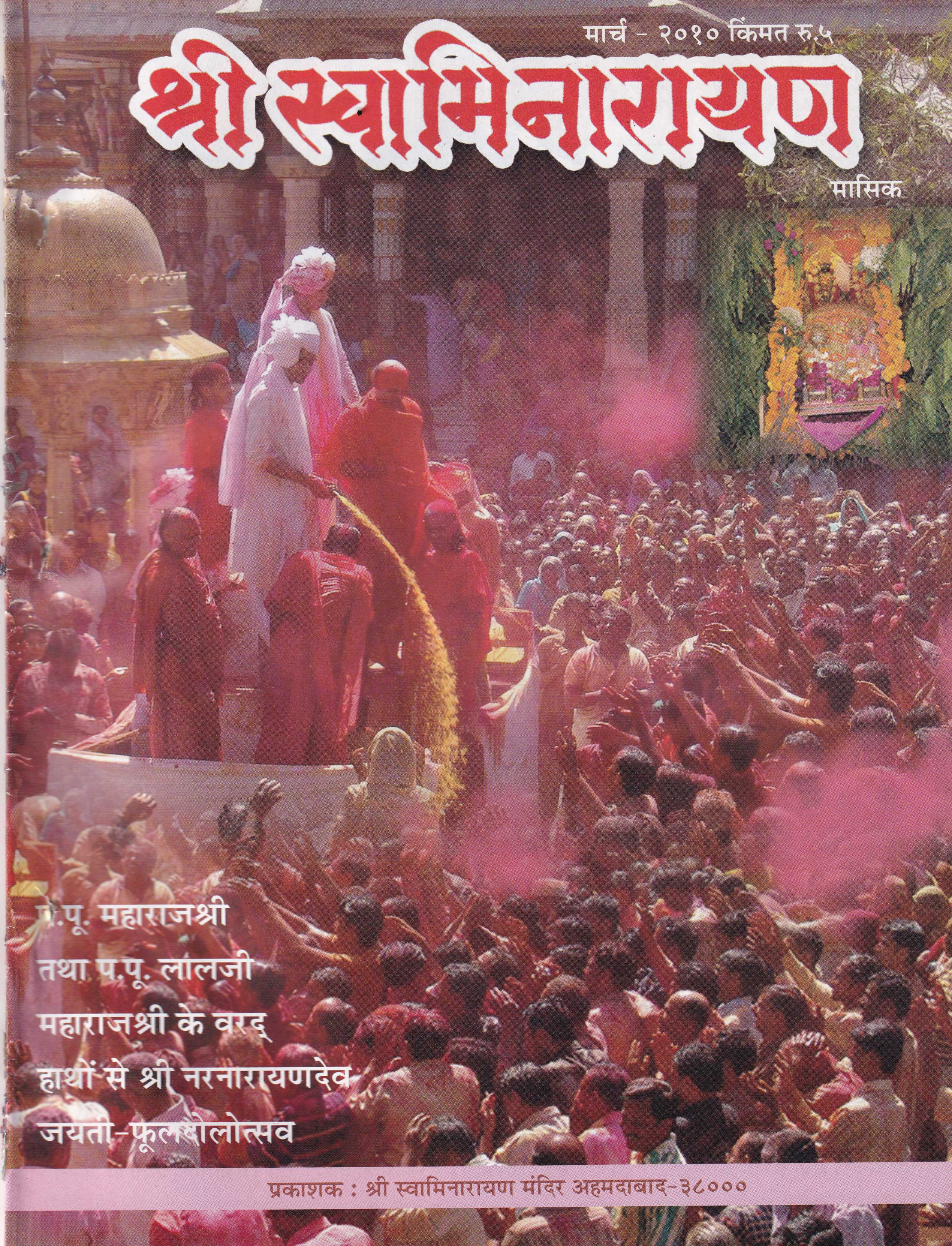

प.पू. महाराजश्री
तथा प.पू. लालजी
महाराजश्री के वरद्
हाथों से श्री नरनारायणदेव
जयती-फूलदोलोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००

१) नारायणघाट मंदिर का पाटोत्सव अभिषेक, अन्नकूट की आरती तथा यजमानश्री प.पू. आचार्य महाराजश्री का आरती उतारते हुये था सम्बोधन करते हुये छोटे पी.पी. स्वामी (२) महेसाणा मंदिर पाटोत्सव-अभिषेक करके श्रृंगार आरती उतारते हुये प.पू. महाराजश्री था प्रासंगिक सभा में सम्बोधन करते हुये शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (३) व्यास पालड़ी मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प.पू. महाराजश्री के वरद् थों से एवं यजमान के द्वारा आरती उतारते हुये एवं कथा का रसपान कराते हुये शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (४) भीमपुरा मंदिर के तृतीय पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री की उपस्थिति में युवक मंडल (५) चराडवा मंदिर रजतशताब्दी पाटोत्सव अभिषेक प.पू. हाराजश्री के वरद् हाथों से तथा आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री (६) लालोडा मंदिर (ईडर) में पारायण प्रसंग पर आरती तारते हुये प.पू. महाराजश्री

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनाराायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ३ अंक : ३५ मार्च-२०१०

अ नु क्र म णि का

१. अस्मदीयम्	२
२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	३
३. सत्संग की चाहना	४
४. भक्ति५	५
५. "एक माला अधिक करना" प.पू. बड़े महाराजश्री	७
६ प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री का ओर्स्ट्रेलिया-न्युजीलेन्ड धर्म प्रवास	८
७. अलौकिक नाम श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा अलौकिक श्री स्वामिनारायण म्युझियम	१०
८. फाल्गुन शुक्ल एकादशी-२०६६ २५-२-२०१० गुरुवार महेसाणा में श्रीजी महाराज का चमत्कार	१२
९. सत्संग बालवाटिका	१३
१०. भक्ति सुधा	१५
११. प्रश्न्न पेटी	१७
१२. सह्नसंग समाचार	१८

सम्पादकीयम

सर्वावतारी भगवान श्रीहरि ने मनुष्य देह धारण करके करोड़ो जीवों के कल्याणार्थ हमें सत्संग की भेंट दी । भगवान एक वात का वारंवार संदेश देते कि हे संतो ! हे भक्तो ! आप सभी सदा मेरे सामने ही देखना । ''प्रेमानंद स्वामीने भी अपने पद में गाया है कि ''हुं तो तम कारण रे आव्यो धाम थकी धरी देह'' । आने वाली चैत्र शुक्ल-९ के दिन अपने भीतर झांककर यह प्रश्न पूछना है कि क्या मैं श्रीहरि की तरफ देखता हूँ ? श्रीजी महाराज तथा संत एवं हरिभक्तों ने जो पुरुषार्थ किया, जो अपमान सहन किया, दुःख उठाया उसी का यह प्रतिफल है, जो इतना कल्याणकारक सम्प्रदाय मिला । अपने हृदय में यह सदा विचार करते रहना चाहिये कि यह सत्संग तो मिला लेकिन हम सत्संग को पहचान सके या नहीं ? हमें प्रभु में प्रीति या प्रतीति हुई क्या ? इस सत्संग की जितनी महिमा जाने या श्रीजी महाराज की जितनी महिमा जाने वह कम ही है ।. देव, आचार्य, संत, सत्शास्त्र की महिमा को जानकर सत्संग, दर्शन, भक्ति, सेवा करे तो यहीं पर अक्षरधाम का सुख प्राप्त किया जा सकता है । दर्पण की तरफ पीठ करने से कभी भी अपना मुख देखा नहीं जा सकता । इसी तरह इस सत्संग में स्वस्वार्थसिद्धि या मान, पान प्रसाद के लिये जो लोग विमुख होते हैं उन्हें भी कभी श्रीहरि अक्षरधाम का सुख प्रदान नहीं करते । परंपरा को समझकर तथा महिमा को समझकर जो प्रभु की शरणागति स्वीकार करलें वे ही श्रीहरि की सच्ची हरि जयंती मना सकेंगे ।

आज से प्रारंभ करके आनेवाली फाल्गुन शुक्ल तृतीया (८-३-२०११) तक सभी सत्संगियों के लिये अलौकिक वर्ष है । प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. आचार्य महाराजश्री की आंज्ञा से यह वर्ष म्युझियम के उद्घाटन वर्ष के रुप में हम सभी को मनाना है । प्रत्येक गाँव के या प्रत्येक घर के लोग भजन भक्ति करें, कीर्तन करें सत्संग सभा करें, या बड़ा कोई उत्सव करें यह सभी आयोजन श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उद्घाटन हेतु करे यह आज्ञा है । इस लिये हम सभी अपना तन, मन, धन आने वाले म्युझियम उद्घाटन उत्सव में अर्पण करके जीवन को कृतार्थ करें ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१०)

१. लींमडी (मूली देश) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

२. श्री स्वामिनारायण मंदिर लूडावाडा (पुराना मंदिर) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी - पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर भक्तिनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर लक्ष्मीनगर - मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण

७. श्री स्वामिनारायण मंदिर मेड़ा (बहनो के) कथा पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।

८ .श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा कथा पारायण की पूर्णाहुति पर पदार्पण

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर आदरज के खात पूजन पर पदार्पण
प.भ. अशोकभाई हरिभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, न्यु राणीप

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर सईज (कलोल) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा सुवर्ण जयंती पाटोत्सव प्रसंग पर आयोजित शोभायात्रा में प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे

१५. व्यास पालडी श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा सुवर्ण जयंती पाटोत्सव अपनी उपस्थिति में सम्पन्न किये

१७. अहमदाबाद कालूपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के १८८ वें पाटोत्सव को अपने वरद् हाथों से संपन्न किये

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया रामबाग पाटोत्सव तथा ब्रह्मभोज के अवसर पर पदार्पण

२०. श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर - साबरकांठा का युवा सत्संग शिबिर अपनी उपस्थिति में सम्पन्न किये
श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ शोभायात्रा में पधारे

२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

२३. कुहा श्री स्वामिनारायण मंदिर पारायण प्रसंग पर पदार्पण
श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया तृतीय पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप रजत जयंती पाटोत्सव अपने वरद् हाथों से संपन्न किये

- शा. स्वा. अभयप्रकाशदास गुरु
महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

सत्संग की चाहना

भगवान स्वामिनारायण जब इस पृथ्वी पर पधारे उस समय साथ में मुक्तों को लेकर पधारे थे । उस में कुछ संत हुये कुछ हरिभक्त हुये । श्रीहरि उन संत-हरिभक्तों को साथ लेकर देश देशान्तर में घूमकर अनेकों जीवों का कल्याण किये थे । महाराज की आज्ञा से जब संत देश देशान्तर का पर्यटन कर रहे थे उस समय कुछ विघ्न संतोषी लोग तथा द्वेषी साधु संतो पर धूल फेंकते, पत्थर मारते थे । फिर भी अनेकों कष्ट सहकर महाराज, संत एवं भक्त आज के वर्तमान में हम सभी के लिए सुखप्रदान किये हैं । भगवान स्वामिनारायण कहते थे कि जितना स्नेह पुत्रादि में है यदि उतना ही स्नेह सत्संग में हो तो कुछ अन्य करने की आवश्यकता नहीं है । संत भी कहते हैं जो सत्संग की मर्यादा को समझते हैं उन्हें भी कुछ करने की जरुरत नहीं । ये संत हमारे हैं, भगवान हमारे हैं यह भावना जिसमें हो वह सुखी होता है । संत शिवलाल शेठ का सदा उदाहरण देते रहते हैं ।

शिवलाल शेठ भगवान के अनन्य भक्त थे । वे बोटाद के रहने वाले थे । वे दीवान भी थे । बड़े सुखी थे । जब संत बोटाद पधारते तो वे स्वयं संतो को सामने से लेने जाते और अपने यहाँ रहने-खाने की व्यवस्था करते ।

एक बार कृपानंद स्वामी बोटाद पधारे । सायंकाल का समय था । जैसे जैसे भक्तों को समाचार मिलता गया वैसे-वैसे भक्त स्वामी की कथा सुनने के लिये सभी एकत्रित होते गये । लेकिन शिवलाल शेठ को खबर नहीं थी कि स्वामी यहाँ पधारे हुये हैं । पत्नी को खबर थी लेकिन पत्नी ने नहीं बताया, इसलिये की ये घर रुकेंगे नहीं, स्वामी के पास चले जायेंगे । भोजन के बाद पत्नी ने बताया कि इस गाँव में स्वामी जी पधारे हैं । सुनते ही शेठ ने कहा पहले क्यों नहीं बतायी । पत्नीने कहा यदि पहले बताती तो आप विना खाये ही चले जाते । सुनने के बाद तुरन्त ही स्वामी के पास चल दिये । वहाँ सभा प्रारंभ होने वाली थी । उसी समय शेठ वहाँ पहुँच गये । सभा में जहाँ जगह मिली वहीं बैठ गये । लेकिन भोजन के बाद जो सोपाड़ी पत्नीने दिया था उसे मुख में डाले हुये कथा श्रवण करते रहे । उसी समय जोर से दांत दबाये और सोपाड़ी का टुकडा तो हो गया लेकिन आवाज भी हुई । यह आवाज शान्त सभा में सुनाई दी । सभी लोग दूसरे को देखने लगे लेकिन कीसी को ख्याल नहीं आया कि यह आवाज कहाँ से आयी । इतने में दूसरे सोपड़ी के टुकडे की आवाज हुई । स्वामी देखे लेकिन आवाज का ख्याल नहीं आया । इसी तरह तीसरीबार सोपाड़ी के तोड़ने की आवाज आते ही स्वामी ने कहा कि कौन ऐसा कुत्ता है जो हड्डी चबा रहा है तथा सभा की मर्यादा का उल्लंघन कर रहा है । यह सुनते ही शिवलाल शेठ को ख्याल आया कि मुझसे ही सभा की मर्यादा का उल्लंघन हो रहा है । शेठ खड़े हो गये और स्वामी के पास जाकर पैर पकड़कर कहने लगे कि स्वामी हमसें भूल हो गयी है । स्वामी क्रोधमें आकर कहे कि आप अभी सभा में से बाहर चले जाइये । आपको सभा में बैठने का अधिकार नहीं है । फिर भी क्षमायाचना शेठ करता रहा । स्वामी प्रसन्न नहीं हुए बल्कि उसे कहे कि तुम्हे सत्संग में बैठना हो तो जहाँ सभी जूता निकालते हैं वही पर जाकर बैठ । भक्तों के जूते साफ करना और रखवाली करना । शेठ स्वामी की आज्ञा को शिरोधार्य करके जूता की रखवाली करने लगा । इस तरह एक दो दिन नहीं बल्कि स्वामी तो दो मास पर्यन्त बोटाद में रुके और कथा चलती रही शेठ रोज इसी तरह करता । जब स्वामी बोटाद से निकलने लगे तब शेठ शिवलाल को बुलवाये और उनकी इस तरह की सत्संग में दृढता देखकर गले लगा लिये । स्वामी शिवलाल शेठ से पूछे कि तुम्हे कभी ऐसी भावना नहीं हुई कि एक बार पूछें कि मेरे साथ ऐसा क्यों किये । तब शेठने कहा स्वामी जगत में मान-सन्मान तो सभी जगह मिलेगा लेकिन ऐसे भगवान, संत, हरिभक्त तथा ऐसा सत्संग अन्यत्र कहाँ मिलेगा । इसलिये नाना प्रकार के विचार आने पर भी हम कहीं नहीं गये । स्वामी खूब प्रसन्न हुये और सभी से कहने लगे कि शेठ की तरह जिसमें सत्संग के प्रतिनिष्ठा होगी वह कभी विचलित नहीं होसकता है ।

भक्ति

– साधु व्रजभूषणदास गुरु स्वा. श्यामसुन्दरदासजी (हरिद्वार)

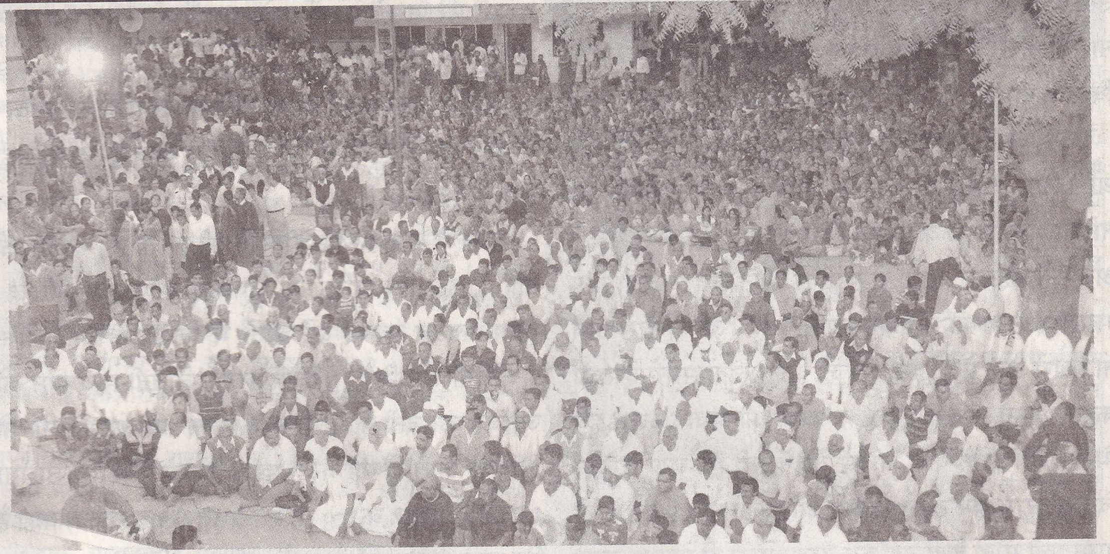

तुलसीदासजीने रामायण के अरण्यकांड में लिखा है कि

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता,
मानउ एक भगति कर नाता ।
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई–
धन बल परिजन गुन चतुराई ।
भगति हीन नर सोहई कैसा –
विनु जल वारिद देखिय जैसा ॥

मर्यादा पुरुषोत्तम राम शबरी को कहते हैं कि हमारा भक्ति के साथ सम्बन्धहै । ऊंच नींच तथा कुल के साथ कोई संबन्धनहीं । जिस व्यक्ति का ऊँच कुल हो, धर्मपालन करता हो, धनवान हो, बलवान हो तथा अन्य दूसरे गुण हों परंतु उसमें भक्ति न हो तो वह व्यक्ति जल के विना सुखे सरोवर की तरह है । अर्थात् भक्ति बिना व्यक्ति में चाहे जितने भी गुण हों उसकी शोभा नहीं होती है ।

भगवान की भक्ति छोड़कर जो मुक्ति की आशा रखते है, उनकी इच्छा कभी पूर्ण नहीं होती, भक्ति सभी सुखका मूल है । भक्ति को ''मान्जार न्याय'' कहा जाता है । जिस तरह बिल्ली अपने बच्चे को मुख में रखकर एक घर से दूसरे के घर ले जाती है तथा दूसरे के घर से तीसरे घर ले जाती है तथा चौथे घर, इस तरह फिरा करती है । लेकिन बच्चे को कुछ नहीं होता । इतनी सतर्कता रखती है । सम्पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ यह कार्य करती है । इसी तरह भक्तिमार्ग में भक्त का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व भगवान का होता है । जगत का थोड़ा भी बंधन भक्त को भगवान आने नहीं देते, यदि आता है तो कुछ दुःख पीड़ा देकर उस संसार के बन्धन से मुक्त कर देते हैं । इसी लिये भागवत के आठवें स्कन्धतथा बाइसवें अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ब्रह्मा को कहते हैं कि ''मैं जिस पर कृपा करता हूँ उनका सर्वस्व लेलेता हूँ । भक्ति मार्ग में भक्त का सम्पूर्ण उत्तर दायित्व भगवान का होता है । इसलिये भक्ति को मार्जारन्याय कहा गया है ।

एक समय देवर्षि नारदजी भगवान विष्णु के दर्शनार्थ गये भगवान किसी काम में व्यस्त थे । इसलिये नारदजी

प्रतीक्षा करने लगे। इतने में नारदजी की दृष्टि किसी डायरी पर पड़ी। नारदजी उस डायरी को खोलकर देखने लगे। उस में लिखा था कि मेरी भक्ति करने वाले भक्तों की नामावली। नारदजी को जिज्ञासा हुई, इस में किसके किसके नाम हैं।

नामावली खोलते ही प्रथम क्रम में नारदजी का नाम था। नाम देखने के बाद नारदजी वहाँ से निकल पड़े नारायण नारायण करते हुये। भगवान का दर्शन रह गया। अब उन्हें अहंकार जगा, वे सभी से कहने लगे कि मेरा नाम भगवान के भक्तों में प्रथम स्थान पर है। अरे तुम्हारा नाम तो सबसे अन्त में है। इस तरह जो भी मिलता सबसे ऐसा ही कहते। इतने में हनुमानजी भगवान की भजन करते हुये मिल गये। उनके पास जाकर कहने लगे कि क्या सम्पूर्ण दिन रात राम राम करते रहते हो आपका नाम तो भक्तों की नामावली में तो है ही नहीं इस तरह अपनी ही प्रशंसा करते रहे। इतने में हनुमाजीने नारदजी से कहा कि क्या आप भगवान की पर्सनल डायरी देखे हैं। वह डायरी अपने पास ही रखते हैं। यह सुनते ही नारदजी भगवान विष्णु के पास आये और कहने लगे कि आप अपनी पर्सनल डायरी दीजिये वांचना है। भगवान अपनी पर्सनल डायरी उन्हें दिये, जिस मोटी हेडींग में लिखा था कि ''मैं जिसकी भजन करता हूं ऐसे भक्तों की नामावली''। वह पढते ही उनके दिमांक उड़ गये क्यों कि उस नामावली में प्रथम नाम तो हनुमानजी का नाम था। यह पढ़कर वे ठन्ढे हो गये। अब वे विचार करने लगे कि इसमें मेरा नाम क्यों नहीं है। बाद में भगवान से पूछने लगे कि इसमें मेरा नाम क्यों नहीं है? भगवान कहने लगे कि जो दूसरों को बताने के लिये भजन भक्ति करते हैं उन लोगों की बड़ी डायरी है। जो डायरी मेरे पास है उसमें उनके नाम हैं जो मुझे प्रसन्न करने के लिये भक्ति करते हैं।

इसलिये हमें अपने मन से निश्चित करना है कि भगवान के पास वाली डायरी में हमारा नाम हो या बाहर वाली बड़ी डायरी में नाम हो?

ज्ञान में प्रभु को प्रसन्न करने की शक्ति है। रुलाने की नहीं। जब कि भक्ति तो भगवान को रुला देती है। गुणातीतानंद स्वामी की बातों में लिखा है कि ''भक्ति संजीवनी औषधिहै''। जिस तरह संजीवनी मृत्यु प्राप्त को जीवित कर देती है। इसी तरह भक्ति रुपी रस किसी को पिलाया जाय तो वह जन्म-मरण के फेरे में से छूट जायेगा। गढडा मध्य प्र. के १० वें वचनामृत में महाराज ने कहा है कि ज्ञान-वैराग्य में दैवत हैं लेकिन भक्ति जितना नहीं। रामकृष्ण परमहंस कहते थे कि मेला में बालक भूल न जाय इसलिये पिताजी का हाथ पकड़ता है। परंतु मेला मे मित्र मिले राम-राम करके हाथ मिलावें तो बालक के हाथ छूटने की डर है। लेकिन समझदार बालक हो तो वह एक हाथ से पिताजी की अंगुली तथा दूसरे हाथ से मम्मी की साड़ी पकड़ रखे तो कभी भी नहीं भूलेगा। यदि पिता रुपी ज्ञान की अंगुली पकड़ा होगा, तथा माता रुपी भक्ति का पल्लू नहीं पकड़ा होगा तभी संसार में भूलने की डर संभव है। इसलिये भक्तिरुपी पालव कभी छोड़ना नहीं चाहिये।

''भवसागर में भक्ति हरिनी, अगरवानो आरोजी।
ते विना उपाधिबीजु बेठ तरीके धारोजी॥''

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० • शृंगार आरती ८-०५
• राजभोग आरती १०-१० • संध्या आरती १८-४५ • शयन आरती २०-१५

"एक माला अधिक करना" प.पू. बड़े महाराजश्री

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (अहमदाबाद)

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपनी बाहो में भरकर अहमदाबाद मंदिर में अपने ही स्वरुप श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया था जिसका । १८८ वां पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग की दिव्य सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री आशीर्वाद देते हुये बताये कि आज का उत्सव कुछ विशेष दिव्य लग रहा है । नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा के समय शीतवातावरण था । नंद संतो ने महाराज से पूछा कि शिवरात्री के जाने के बाद भी ठन्ढक क्यों है ? महाराजने कहाँ कि श्री नरनारायणदेव हिमालय से ठन्ढक लेकर आये हैं । आज इस पाटोत्सव में भी वसंत पंमची चली गयी । उस प्रतिष्ठा में अंग्रेज गवर्नर उपस्थित थे । इस समय अंग्रेज शासक टोनी मेकनहरी तथा नवीन शाह उपस्थित हैं । यह समग्र महोत्सव पुनरावर्तित जैसा लग रहा था ।

महाराजंने श्री नरनारायणदेव की सेवा करने की आज्ञा की है । परंतु समय के अनुसार यह बड़ा कठिन है । फिर भी वर्ष में दो बार प्रभु के चरण स्पर्श करने का अवसर मिलजाता है । प्रत्येत मनुष्य महाराज से कुछ न कुछ मांगता ही है । हम भी आज के दिन श्री नरनारायणदेव से दो वस्तु मांगते हैं । प्रथम यह कि द्विशताब्दी महोत्सव के समय श्री नरनारायणदेव के पास यह मांगा था कि हे महाराज ! यह उत्सव आपका है व्यवस्थित सम्पन्न हो तथा इसमें कोई कमी न रहजाय । यदि क्षति रह गयी तो आपका खराब लगेगा । हमारा कुछ खराब नहीं होगा । श्री नरनारायणदेव मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर लिये जिससे उत्सव खूब सुंदर ढंग से सम्पन्न होगया । उसी तरह आज भी यह मांगे कि यह म्युझियम आपका है, जिसका उद्घाटन महोत्सव आरहा है, यह भी आप ही का है, हर तरीके से यह भी निर्बिध्न पूर्ण होजाय । आज से प्रत्येक हरिभक्त म्युझियम के उद्घाटन तक प्रातः की पूजा में एक माला और कीजियेगा । महाराज भक्ति से वश में होते हैं । इससे महोत्सव सुंदर ढंग से संपन्न हो सके । म्युझियम के लिये तन, मन, धन से सेवा करने की बात करते हैं, इसमें मन प्रथम है बाद में तन, धन आता है । जब मन लगायेंगे तो अपने आप तन एवं मन लग जायेगा । दूसरा महाराज से यह मांगा कि हे महाराज ! अहमदाबाद देश में आचार्य संत तथा हरिभक्तों में जो स्नेह तथा आत्मीय प्रेम है उसमें किसी की नजर न लगजाय । इसी तरह का भाव सदा बना रहे ।

आज के पाटोत्सव के यजमान की निष्ठा देखकर प्रशंसा करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री ने कहा कि आज से पांच वर्ष पूर्व लन्डन में इस यजमान परिवार के घर हमारे परिचित एक सज्जन गये थे । उन सज्जन की ऐसी आदत थी कि प्रातः उठकर स्नान करने से पहले चाय पीते थे । लेकिन उन सज्जन ने उस परिवार के सात वर्षीय एक बालक को प्रातः स्नान के बाद पूजा करते देखा तो उनके मन में यह भाव जगा कि मेरे में यह जो कुटेव है वह ठीक नहीं है, तुरन्त उसी समय उन्होंने मन से संकल्प किया और स्नान से पूर्व चाय की आदत को छोड़ दिया ।

इस प्रसंग पर श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप यजमान परिवार पर प्रसन्न होकर शुभाशीर्वाद दिये थे । यहाँ यह कहना उचित होगा कि देश-विदेश में रहने वाले सभी सत्संगी जिन्हें पू. बड़े महाराज में आत्मीय निष्ठा एवं प्रेम हो, गुरुभाव हो तथा श्री स्वामिनारायण म्युझियम को अपना मानते हों तो प.पू. बड़े महाराजश्री की इस आज्ञा का प्रेमपूर्वक पालन अवश्य कीजियेगा अमुक समय में इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण को प्रसन्न करने का अवसर मिल ही जाता है । वह प्रसन्नता प्राप्त करलेनी ही आश्रितों का अपना धर्म है । यही आश्रित होने का लक्षण भी है ।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री का ओस्ट्रेलिया-न्युजीलेन्ड धर्म प्रवास

- डॉ. रंजनबहन पटेल (ओंकलेन्ड)

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव देश के विदेशमें लाखो सत्संगी है। जरुरत के मुताबिक मंदिर भी बनते जा रहे हैं। उसमें भी विदेश में अमेरिका, केनेडा, यु.के., ओस्ट्रेलिया, आफ्रिका, मिडल इस्ट, न्युजीलेन्ड आदि देशो में ५० से अधिक मंदिर है और नये मंदिर बन रहे हैं। श्री नरनारायणदेव गादी के प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा अ.सौ.प.पू. बड़ी गादीवालाश्री सत्संग को पोषण मिले उसके लिये प्रयत्नशील रहते हैं। हंमेशा विचरण करते रहते हैं। सर्वोपरि श्रीहरि के समय में नंदसंत हर गाँव में पैदल चल करके मनुष्य के पास जा कर सत्संग कर सत्संगी बनाते थे। बहुत कष्ट सहन करते थे तब इतना सत्संग का प्रसार हुआ है। श्रीहरि के अंतर्ध्यान के बाद ये सारी जिम्मेदारी आचार्य महाराजश्री पर आती है इसलिये आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी से लेकर वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री रात-दिन सत्संग के लिये विचरण करते हैं।

अभी दि. ३१-०१-२०१० को श्री नरनारायणदेव गादी के अ.सौ.प.पू. बड़ी गादीवालाश्री ओस्ट्रेलिया, न्युजीलेन्ड, बेंगकोंक की धर्मयात्रा पर सांख्ययोगी बाईयो के साथ पधारी थी।

सर्व प्रथम पर्थ शहर में निष्ठावान जसु बहन के वहाँ निवास कर शाम को सत्संग सभा का आयोजन हुआ था। प.पू. गादीवालाश्री ने ठाकुरजी की आरती उतारी थी। उसके पश्चात् धुन-कीर्तन हुए थे। विशाल सभा में प.पू. बड़ी गादीवालाने आशीर्वाद देते हुए कहा था कि सभी बहने नियम निश्चय और पक्ष दृढ रखना उसमें कोई कमी मत रखना। वहाँ उपस्थित बहने भी उनकी अलौकिक मुख की वाणी सुनकर खूब भाव विभोर हुई थीं।

दि. १-२-२०१० को यहाँ किंग्सपार्क में सुंदर सत्संग शिबिर का आयोजन हुआ था। जिसमें प.पू. बर्डी गादीवालाश्रीने अपनी सुमधुर वाणी से युवतियो को कौटुंबिक जीवन, कोलेज जीवन, सामाजिक जीवन तथा आध्यात्मिक जीवन किस प्रकार जीना यह दृष्टांत देकर समझाया था। श्रीजी महाराज की पाँच बार मानसिक पूजा किस प्रकार करनी ये भी समझाया था। अंत में भक्ति से भरे हुए कार्यक्रम हुए थे। श्रीहरि के नाम की मंगल ध्वनि की धून के पश्चात् प्रसाद लेकर समापन हुआ था। शाम को प.भ. जसुबहन के यहाँ प.पू. बड़ी गादीवालाश्री की उपस्थिति में सभा हुई थी। जिसमें सांख्ययोगी रेखाबा और गीताबाने वचनामृत पर विवेचन कर समझाया था जिसमें बहुत सारी बहने उपस्थित थी। पर्थ में प.भ. धनजीभाई भूडीयाने सुंदर व्यवस्था की थी। यहाँ अन्य बहनोंमें स्नेहाबहन, भावीबहन, हंसाबहन वरसाणी, अस्मिताबहन राबडीया, शिल्पाबहन केराई और पुष्पाबहन आदि बहनोने सेवा कर दिव्य लाभ प्राप्त किया था।

दि. २-२-२०१० को पर्थ से बिदाई लेकर सीडनी पधारी थी। प.भ. शीतलबहन के यहाँ तीन दिन रुक कर सेवा का अविरत सुख प्रदान की थीं। कथा वार्ता, कीर्तन भक्ति, नित्य, नियम, थाल आरती और समस्त बहनो को आशीर्वाद देकर सुख प्रदान की थी। चोथे दिन भव्य सत्संग शिबिर हुई थी उसमें सीडनी की सभी सत्संगी बहन, युवती तथा बालिकाये उपस्थित थी। कथावार्ता

तथा प्रश्न उत्तर में प.पू. बड़ी गादीवालाने सरलता से प्रश्न के उत्तर दिये थे जिससे सब आश्चर्य में आ गयी थी। अंताक्षरी में १ घंटे तक नंद संतो के कीर्तन गाकर भक्तिमय हो गयी थी। सचमुच बहनो की भाग्य बहुत सुंदर थी। एसे सुख की तो कल्पना भी नहीं कर सकती थी।

सीडनी में अपने हरिभक्त प.भ. महेन्द्रभाई और आई.एस.एस.ओ.के. प्रमुख प.भ. खीमजीभाई वाघजीयाणीने सुंदर व्यवस्था कर धर्मकुल की प्रशंसा प्राप्त किये थे। सत्संगी बनहों में शीतलबहन अमीन के यहाँ रुके थे, स्नेहाबहन, वर्षाबहन, मेघना बहन, मायाबहन अमीन आदि लोगोने प.पू. गादीवालाश्री की सेवा की थी। तथा पुष्पाबहन, अमृतबहन, ज्योतिबहन, वनीताबहन, हीराबहन आदि अनेक बहनोने सत्संग का अलौकिक लाभ प्राप्त किया था।

दि. ८-२-२०१० को सीडनी से बिदाई लेकर प.पू. बड़ी गादीवाला ओकलेन्ड (न्युजीलेन्ड) में अपने मंदिर के मुख्य प्रणेता और श्री नरनारायणदेव के प्रति जिनकी निष्ठा अजोड है तथा संपूर्ण परिवार सत्संग के रंग से रंगा हुआ है वैसे डॉ. रंजनाबहन कांतिभाई पटेल के निवास स्थान पर पधारे थे। उस समय पुष्पहार से उनका स्वागत किया गया था। वहाँ पर पपू. बड़ी गादीवालाने अपनी मूल हिन्दीभाषा में खूब सरलतापूर्वक दृष्टांत के साथ व्याख्यान की थी सत्संगी बहनो द्वारा यहाँ पर तीन दिन की सभा का आयोजन था और परोक्ष के धर्मप्रेमी बहनोको अलौकिक सुमधुर वाणी से एसी प्रभावित की कि सभी के आंखो में से आंसु की धारा बहने लगी थी। वहां दिन में हरिभक्तो के यहाँ पदार्पण होता और रात के ७ से १० बजे तक प.पू. बड़ी गादावाला अमृतवाणी का लाभ देती थी। बालिकाओ के कठिन प्रश्नो का सहजतापूर्वक उत्तर देते हुए पूजाविधिशिखाई थी। यहाँ पर समूह महापूजा प.पू. बड़ी गादीवाला की उपस्थिति में हुई थी जिस में ७० से अधिक बहनोने भाग लिया था। सांख्ययोगी बहनोने महापूजा विधिकरवाई थीं।

ओकलेन्ड में अपने निष्ठावान प.भ. कांतिभाई पटेल और उनके परिवार ने सुंदर व्यवस्था कर धर्मकुल की विशेष प्रसन्नता प्राप्त की है। यहाँ कई बहनो ने सत्संग का लाभ लिया था। ओकलेन्ड के मंदिर में प.पू. बड़ी गादीवालाने चार दिन तक आरती कर सभी बहनो को दर्शन आशीर्वाद का अलौकिक सुख दिया था। यह बहनो द्वारा कभी नहीं भूला जायेगा। यहाँ का अपना मंदिर खूब भव्य है।

ओकलेन्ड के बहनो से भावपूर्वक बिदाई लेकर दि. १५-२-२०१० को बेंगकोक में प.भ. उर्मिलाबहन रजनीभाई के वहाँ पधारी। यहाँ सभी बहनोने भावपूर्वक स्वागत किया था। यहाँ शाम ५ से ७ सभा हुई जिस में सांख्ययोगी बहनो ने सुंदर कथा करके सर्वोपरि श्रीजी महाराज और धर्मकुल की महिमा समझायी थीं तथा प.पू. बड़ी गादीवालाश्रीने भगवान की सर्वोपरिता के साथ मनुष्य जन्म की दुर्लभता का दृष्टांत समझाया था तथा आशीर्वाद दिये थे। बेंककोक में उर्मिलाबहन रजनीभाई पटेल के यहाँ भोजन लिया था। देविका बहन बंसीलाल के वहाँ शाम ५ से ८ सभा हुई थी और रात्रि निवास भी वहीं हुआ था। अन्य अलोयाबहन, धराबहन, रुपलबहन, नीतुबहन, पीनाबहन, जस्मीनबहन, झंखनाबहन, किष्णाबहन, स्वातिबहन, हिनाबह, दिव्याबहन, भावनाबहन, प्रेरणाबहन आदि अनेक बहनोने सत्संग सभा का लाभ लिया था।

प.पू. बड़ी गादीवाला की १५ दिन की धर्मयात्रा में कई नयी बहने सत्संगी बनी। हजारो बहनोने कथावार्ता से सर्वोपरि श्रीहरि को पहचाना और धर्मवंशी को माना दि. १६-२-२०१० को ५-३० को बेंगकोक से निकलकर स्वस्थान अहमदाबाद पधारी थीं।

अलौकिक नाम श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा अलौकिक श्री स्वामिनारायण म्युझियम

शा. दिव्यप्रकाशदास गुरु शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद)

भगवान की मूर्ति में से निकलती किरणें तेज की समूह हैं । तेज + इन्द्र + प्रसाद - सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण के पुत्र तथा श्री नरनारायणदेव गादी के छठे आचार्य विश्ववंदनीय प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री जिस के इतने अधिक गुण है कि लिखना असम्भव है। जिस के भीतर दया, करुणा, आत्मीयप्रेम, निरन्तर धर्मपालन, जीव मात्र पर अपार स्नेह की दृष्टि इत्यादि अनेकों गुण भरे हैं।

श्री नरनारायणदेव की गादी पर से निवृत्त होने के बाद श्री स्वामिनारायण म्युझियम की प्रवृत्ति में रात-दिन प्रवृत्ति होते हुये भी अनेकों छोटे-बड़े हरिभक्तों को प्रसन्न रखने के लिये उनके घर पदार्पण करते रहे हैं। इसके साथ ही सभा में उद्‌घाटन प्रसंग में, पारायण में, नाना विधकार्यक्रमो में जब प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री विदेश की यात्रा पर रहते हैं तो प.पू. बड़े महाराजश्री पधारने के लिये हाँ करते हैं और यह कहकर कि आप म्युझियम के लिये क्या योगदान करेंगे । ६६ वर्ष की उम्र होते हुये भी भगवान की कृपा से स्वास्थ्य पूर्णरुप से ठीक रहता है। जिससे दूर-दूर तक अपनी गाड़ी में बैठकर संत-हरिभक्तों को प्रसन्न रखने के लिये पधारते हैं । पू. महाराजश्री समय की मर्यादा में तो श्रीजी महाराज से भी आगे हैं। समय से पहले अपनी दैनिक विधिपूर्ण करके श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती करने मिनिट क्या सेकेन्ड भर भी बिलम्ब किये बिना पहुँच जाते हैं । घड़ी के समय में फेरफार हो सकता हैं लेकिन पू. महाराजश्री के समय में फेरफार नहीं होता। इस पद पर महाराज जैसे तैसे व्यक्ति को नहीं प्रेषित करते । उनके जैसे गुणवान ही इस पद का अधिकारी हो सकता है। श्रीहरि इस पृथ्वी पर प्रगट होकर मोक्ष के द्वार को खोल दिये उसी तरह पू. बड़े महाराजश्री अनंतजीवों के कल्याण हेतु मोक्ष का सदाव्रत चलाये । श्री स्वामिनारायण म्युझियम में प.पू. बड़े महाराजश्रीने संकल्प किया ऐसा संकल्प किसी करोड़पति के माध्यम से करवाये होते तो कब का पूरा हो गया होता । लेकिन पू. महाराजश्री का विचार श्रीहरि की तरह है । जिस तरह श्रीहरि छोटे से बड़े तक सभी को समान भाव से सेवा में लेते थे, ठीक वही स्थिति पू. बड़े महाराजश्री की है । जिसकी तुलना समग्र ब्रह्माण्ड में भी नहीं हो सकती भगवान की अलौकिक प्रसादी की वस्तुओं का संग्रह

स्थान श्री स्वामिनारायण म्युझियम होगा । जिससे छोटी-बड़ी सेवा करने वालों का कल्याण हो सके । प.पू. बड़े महाराजश्री के मुख सें सदा तेज ही झरता रहता है । जिसके दर्शन करते ही मन का ताप दूर होजाता है । इन्द्र के गर्व को भी दूर करनेवाले ऐसे भगवान के पुत्र पू. बड़े महाराजश्री के चरणों में कोटि कोटि वंदन । इन्ही की तरह वर्तमान पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री है, अन्त में पू. बड़े महाराजश्री के चरणों में प्रार्थना है कि हमारे जैसे छोटे-बड़े सभी संत हरिभक्तों का कल्याण करके अपने चरणों में सुख देकर अक्षरधाम का अधिकारी बनाना । हम सभी श्री स्वामिनारायण म्युझियम में सेवा करने का अवसर प्राप्त कर सकें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

श्रीजी महाराज जब गढपुर मंदिर का निर्माण करवा रहे थे उस समय ऐसा प्रचार करवाये कि जो भी मंदिर में ईंटा पत्थर स्वयं अपने हाथ से डालेगा उसके पीढी दरपीढी का हम कल्याण करेंगे । एक मुश्लिम भक्त सात शेर का पत्थर डाला तो भगवानने उसके सात पीढी का उद्धार कर दिया । एक गरीब महिला ने पचास पैसा दिया तो महाराज ने उस पैसे का उपयोग मंदिर में ले लिया और उसका कल्याण किया । भगवान के ऐसे चरित्र याद करके अपने प.पू. बड़े महाराजश्री ऐसा ही भव्यातिभव्य श्री स्वामिनारायण म्युझियम बना रहे हैं । इसमें अनेको भक्तों के इतिहास जुड़े हुये हैं ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम अब पूर्ण होने की स्थिति में हैं । जो इस भगीरथ कार्य में रह गये हों वे त्वरित संकल्प करके यथायोग्य सेवा करने हेतु म्युझियम अवश्य पहुँचे, इससे जीवन का अमूल्य लाभ मिल सकेगा । ऐसे अवसर का लाभ लेकर जीवन को सफल बनाकर अक्षरधाम के अधिकारी बनें ।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में ।

१.	प्रकाशन स्थल	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं ।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

फाल्गुन शुक्ल एकादशी-२०६६ २५-२-२०१० गुरुवार महेसाणा में श्रीजी महाराज का चमत्कार

(हमें भगवान का दर्शन हुआ । मैं वैभव हर्षदभाई शाह उम्र २१ वर्ष निवास स्थान - जोषी की खड़की महेसाणा (मूल निवास स्थान डभोई) मेरा अभ्यास एम.कोम., आई.सी.डब्ल्यु.ए.)

आज से १५ दिन पूर्व भगवान स्वामिनारायण स्वप्न में आकर रात्रि में १२-२० बजे उठाकर कहे कि मैं यहाँ हूँ यह तुम्हें खबर है । मुझे यह खबर नहीं थी कि भगवान बोल रहे हैं। उन्होंने कहा मैं भगवान बोल रहा हूँ।

उस समय भगवान सुन्दर वस्त्र धारण किये हुये थे । उनकी बात मैंने नहीं मानी । दूसरी बार कशली बाने दर्शन दिया वे श्वेत साड़ी धारण की थी । उन्होंने जगाकर कहा कि इस दीवाल में भगवान का चरणारविंद है, चांदी का सिक्का है, तथा अन्य प्रसादी की सामान है, उसे नीचे से सवाफुट तथा ऊपर से साड़े तीन फुट नीचे के भाग को खोदो, इसमें से प्रसादी की सामान निकलेगी । एकादशी को हमें बाहर निकालना । चरणारविंद किसी के पग में न आवे इसलिये दीवाल में चुनवा दिया है । इसका कारण यह था कि हमारा कोई उत्तराधिकारी नहीं था । यहां सिलालेख लिखवाकर देशी ईंट के ऊपर चुनवाया गया है ।

दो तीन दिन में ही पुनः स्वप्न में भगवान आकर कहे कि मैं यहीं बैठा हूँ, इसी घर में मैं रहता हूँ।

सोमवार ता. २२-२-१० को प्रातः तीन बजे चोर आये थे । जिसके हाथ में खोदने की सामान थी । वे आते ही दरवाजे के अंकुसे तोड़दिये, उसी समय महाराज पुनः स्वप्न में आकर जगाये कि तुम खड़े हो जाओ चोर आगये हैं वे चरणारविंद चुरा लेजायेंगे । तुरंत ही मैं लाईट चालु किया कि वे सभी कूद कर भाग गये । यह घटना मैंने प्रत्यक्ष देखी । महाराज ने खिचड़ी का प्रसाद करने के लिये कहा । इसके बाद महाराज ने जहाँ पर खिचड़ी का प्रसाद किया था तथा जिस निम्ब वृक्ष के नीचे सभा किये थे वह सब बताये । जिस सभा में सैकड़ों संत विराजमान थे तथा मैं भी वहीं पर बैठा था । महाराज ने हमें बताया कि सामने वाली नदी में मैं स्नान किया था तथा दतुअन भी किया था । इससे पूर्व खिचड़ी का प्रसाद ग्रहण करते हुये बताया । प्रभुने सभी प्रसाद के स्थल को बताया । इन सभी प्रसादी की वस्तु को एकादशी के दिन ही निकालना ।

इसी दिन निकालने का मैने निश्चय कर लिया । प्रातः ५-०० बजे खोदने का निश्चय किया । लेकिन उससे पहले महाराज सुनहरे कपड़े पहने हुये घोड़ी पर सवार ३-०० बजे ही आकर दर्शन देकर कहने लगे कि खोदने के समय हमारे सम्प्रदाय के किसी हरिभक्त को साथ रखकर यह कार्य करना । जिस से सभी को विश्वास हो सके । यह भी कहे कि जिस स्थान से यह प्रसादी की सामान निकले उस स्थान पर यह सभी पूजन में रखना । इससे सभी को दर्शन का लाभ मिलेगा । आज यहाँ पर खिचड़ी का भोग लगाकर सभी लोग प्रसाद के रुप में ग्रहण करना ।

आज्ञानुसार हरिभक्तों को साथ में रखकर खोदकाम करते समय चरणारविंद का दर्शन हुआ तथा कशलीबा जिस तरह बतायी थी उसी तरह की प्रसादी की वस्तुये उस स्थल से प्राप्त हुई । यह सभी प्रसादी की वस्तु को महाराज की आज्ञा से प्राप्त होते ही प्रभु के साक्षात् होने का एहसास हो गया । यह चमत्कार नहीं है तो क्या है । मैं अपने को बड़ा भाग्यशाली मानने लगा कि प्रभुने अपने दर्शन के साथ अपनी प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करवाया ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

संत परमहितकारी

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

नडीयाद के पास उमरेठ गाँव में एक घटना घटी । उस समय गोपालानंद स्वामी वहीं पर थे । एक हरिभक्त किसी को भी जरुरत होने पर पैसे देता था । व्यापार के लिये किसी को चाहिये तो वह कागज पर लिखा कर देता था । हमें पांच हजार रुपये चाहिये दीजिये । यह मेरा दस्तावेज है । जिस मकान में रहता हूँ उसी का यह कागज है, यदि पैसे वापस नहीं कर सकूँ तो आप मकान ले सकते हैं । वह हरिभक्त पैसे देदिया तथा दस्तावेज सुरक्षित रखदिया । घर में किसी को पता नहीं । कुछ वर्ष वीत गये और वह पैसा देने वाला हरिभक्त भगवद्धाम में चला गया । पैसा जो लिया था उसके दिन अच्छे आ गये । वह पैसे एकत्रित किया और वापस करने आया, हरिभक्त के बेटे से कहा कि यह आपके पैसे है वह लेलीजिये और मेरे दस्तावेज देदीजिये । वह घर में दस्तावेज खोजा लेकिन मिला नहीं । इसलिये कहे कि मिल नहीं रहा है । ऐसा क्यों कर रहे हो । आप सत्संगी हैं । भाई ? हम थोड़ा भी झूठ नहीं बोलते हैं । उसे ऐसा हुआ कि मेरा मकान देना नहीं चाहते इसलिये दस्तावेज देना नहीं चाहते । कई बार ऐसा होता है । कोई कितना भी सत्य हो जब अहम् घुस जाता है तो कोई फर्क नहीं पड़ता । वह बड़ा दुःखी हुआ । उसकी पूरे गाँव में निंदा होने लगी । वह सत्संगी नहीं है इसलिये मकान लेने की दियानत हो गयी है । दस्तावेज इसलिये नहीं दे रहा है । सत्संगी बालक के गुरु गोपालानंद स्वामी उस समय उमरेठ में थे । उनके पास जाकर कहा कि स्वामी ऐसा हुआ है । दस्तावेज मेरे पिताजी कहाँ रखे हैं मुझे पता नहीं इस समय मिल नहीं रहा है । मुझ पर लोग मिथ्या आरोप लगा रहे हैं । स्वामी एक व्यक्ति से कहे कि अक्षरधाम में जाकर इसके पिताजी से पूछ आओ, दस्तावेज कहाँ रखे हैं । ओहोहोहो ! ऐसा, ठीक है ऐसा कहकर तुरंत वह अक्षरधाम में गया और थोड़े समय में वापस आया । आकर बताया कि वे अक्षरधाम में नहीं है । वे तो भगवान के भक्त थे, कहाँ गये होंगे । स्वामीने उस बालक से पूछा कि तुम्हारे पिताजी का किस स्वामी के साथ विशेष लगाव था ? उसने बताया अमोघानंद स्वामी के साथ । स्वामी उस भक्त से कहे कि वैकुंठ में जा कर देखो तो वे वहाँ बैठे हुये थे, उन्हें प्रसन्न देखकर कहा कि आपके घर में थोडी गड़बड़ हो गयी है कि दस्तावेज कहाँ रखे है, वह मिल नहीं रहा है । तुरंत ही उन्होंने कहा कि मेरे घर में पग रखते ही तीसरे नं. की पटनी पर दस्तावेज रखे हैं, उसी में वह दस्तावेज मिलेगा । वह भक्त वैकुंठ में से वापस आया और बताया कि दस्तावेज मिल गया कोई तकलीफ नहीं हुई ।

मित्रो ! ऐसे समर्थ संत-पुरुषों में अपार शक्ति तथा सामर्थ्य होता है । लेकिन वे मनमाने ढंग से उसका उपयोग नहीं करते । भगवान की इच्छा जानकर स्थान तथा प्रसन्नता के अनुसार जीवात्मा का कल्याण समझकर उसका उपयोग करते हैं । समझकर जो सत्ता का उपयोग करते हैं वे सुखी होते हैं ।

•

एक उत्तम उपदेश

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

प्रिय मित्रो ! स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में एक उत्तम बात की है कि बिना विचारे कोई भी कार्य नहीं करना चाहिये । जो आवेश में आकर कार्य करते हैं उनकी क्या दशा होती है वह इस बात से स्पष्ट होती है – पहले के जमाने की बात है । उस समय कहीं जाना हो तो कितनी तैयारी करनी पड़ती थी । बिछाने के लिये, ओढने के लिये, भोजन के लिये बरतन, भोजन की सामग्री, पानी का साधन इत्यादि यह सभी सामग्री साथ में न होतो कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था । सवारी के रुप में बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी का उपयोग होता था । कच्चे रास्ते होते थे । इसलिये यह सब का ध्यान रखकर यात्रा की तैयारी की जाती थी । चिमनलाल चोटीवाला एकबार इडरीयोगढ देखने की इच्छा से मात्र कच्चा सिद्धा तथा बिझावन लेकर ही अकेले निकल पड़ा । बाद में उसे पश्चाताप होने लगा ।

हुआ ऐसा कि एक गाँव के बाहर निवास किया और कूंए का पानी तो मिल गया, लेकिन भोजन के लिये क्या

करूँ ? खिचड़ी बनाने का विचार किया । नजदीक में से कुछ लकड़ी बीनकर ले आया । ईंटा का चूल्हा बनाकर उस पर खीचड़ी रख दिया ।

चिमनलाल चोटी वाला विचार करने लगा कि जब तक खिचड़ी पके तबतक गाँव में घूमकर आता हूँ । ऐसा ही किया धूमकर आया तो खिचड़ी में जलने की गन्धआ रही थी । क्योंकि खिचड़ी नीचे से जल गयी थी । इसलिये ऊपर-ऊपर से निकाल कर खाया और जली खिचड़ी छोड़ दिया । तपेली जल गयी थी स्वयं तो थका हुआ था इसलिये बिना मांजे ही सो गया ।

प्रातः होते ही उठा । गाँव के कूंये पर जाकर दातून करके स्नान किया । बाद में उस जली तपेली को मांजने लगा, मांजने में तपेली तो साफ नहीं हुई लेकिन हाथ तो छोला गया ।

''घणी रीते घसी थाकी रे, सुणो साहेलियो ।
बहु डाधरह्या तोय बाकी रे, सुणो साहेलियो ॥''

दाग तो ऐसी की ऐसी ही रही । चिमनलाल खूब क्रोधित हो गया –

पूरी रीते तपेली उपाड़ी रे, सुणो साहेलियो,
सामी भीतनी साथे पछाडी रे, सुणो साहेलियो,
लई पथरो तपेलीने कूटीरे, सुणो साहेलियो,
पड्या वाकां तपेली तो कूटीरे, सुणो साहेलियो ।

तपेली एकदम खराब हो गयी, किसी काम की नहीं रही । यह दृश्य कूंए से सभी पनिहारीन देख रही थी । सभी आपस में बात कर रहीं थी और थपोड़ी पीट कर हस भी रही थी । चीमनलाल के इस क्रिया कलाप की खबर पूरेगाँव में फैल गयी । अभी उनकी भूख की पीड़ा शान्त नहीं हुई कि दोपहर में भोजन किये विना आगे भूखे पेट कैसे जायेगा । चिमनलाल गाँव में तपेली मांगने गया । अन्जान पर कौन भरोसा करेगा । भाई आप आगे जाओ, हमारे पास अधिक वासन नहीं है ।

एने वासण न आपे कोई रे, सुणो साहेलियो,
पछी राग ताणी घणी रोई रे, सुणो साहेलियो ।

माथे पर हाथ रखकर रोने लगा । इससे क्या टूटी तपेली सही होजायेगी । हाँ उसे देखकर लोग अवश्य हंस रहे थे । यह देखकर वह स्वयं शरमा गया ।

तोय थई न तपेली साजी रे, सुणे साहेलियो,
हसे लोक ने ते मरे लाजी रे, सुणो साहेलिया ।

सज्जनो ! दलपतराम कविने इस काव्य के माध्यम से बड़ा सुन्दर उपदेश दिया है –

जेथी स्वास्थ्य आपणो जरीये रे, सुणो साहेलियो ।
तेना ऊपर क्रोधन करिये रे, सुणो साहिलेयो ।
लात दूझती गायनी खमीये रे, सुणो साहेलियो ।
तेने तजिये तो दूधक्या जमिये रे, सुणो साहेलियो ।
कोईनी साथे टूंकारे लडीये रे, सुणो साहेलियो ।
एमां आपणे हलकां पडीये रे, सुणो साहेलियो ।
सांखी चाले ते माणस मोटुं रे, सुणो साहेलियो ।
दलपत कहे नथी खोटुं रे, सुणो साहिलोय ।

सज्जनो ! इस सुंदर दृष्टांत द्वारा उच्च कोटि का ज्ञान दिया है । प्रायः सभी सहवासी एक दूसरे पर नाराज होते हैं । सहवासी का मतलब एक दूसरे पर निर्भर जीवन । जिसके साथ रहकर जीवन यापन होता है । ऐसे माता, पिता, गुरु, पति, पत्नी, भाई, बहन, नौकर, चाकर, मित्र, व्यापारी, ग्राहक इत्यादि के साथ एक समानता न हो तो उपरोक्त स्थिति जीवन में देखने को मिलती है । स्वामिनारायण भगवान के इस तरह बहुत सारे उपदेशों को दलपत राम कविने अपनी कविताओं के माध्यम से पहुंचा ने का प्रयास किया है ।

प.पू. बड़े महाराजश्री के श्रीमुख से वर्णित श्री नरनारायणदेव की महिमा का कोलर ट्यून वोडाफोन ग्राहकों को मोबाईल फोन में डाउनलोड करने के लिये SMS मेसेज वास में लिखें बाद में Ct स्पेस छोड़कर 270930 नम्बर टाईप करके 56789 ऊपर SMS करने से प.पू. बड़े महाराजश्री के श्रीमुख के कंठ से कोलर ट्यून चालू होगा ।

प.पू.अ.सौ. गादीवालजी के आशीर्वचन में से
सच्चा मुमुक्षुत्व किसे कहा जाय

- कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)

इस जगत में दो वस्तु मिलनी बड़ी कठिन है । (१) मनुष्यदेह (२) मुमुक्षुत्व । मनुष्यत्व अर्थात् दूसरे के प्रति उपकार की भावना, दूसरे के प्रति दया भाव, अपकार के बदले अपकार नहीं बल्कि उसके प्रति उपकार की भावना ही मनुष्यत्व का घोतक है।

मुमुक्षुत्व - अर्थात् व्यक्ति के मन में मोक्ष की जिज्ञासा आज जगत में आध्यात्म मार्ग पर चलने वालो की संख्या बहुत है । परंतु अध्यात्म के मार्ग पर चलने के बाद मोक्ष प्राप्ति के लिये सतत प्रयत्नशील रहने वाले कम है । इस तरह इस पर चलने वाले तो हैं लेकिन जगत का व्यवहार साथ रखते हैं इससे उनका यह मुमुक्षुत्व क्षण भंगुर ही कहा जायेगा । उनकी मुमुक्षुता में तीव्रता नहीं होती इसलिये लटकजाते हैं । संसार के व्यवहार में होते हुये भी लक्ष्य मोक्ष का होना चाहिये । इसका जिसके जीवन में सतत चिन्तन रहेगा वह कभी लक्ष्य चूक नहीं सकता । किस कार्य के करने से हमारा अहित होगा ? किस मार्ग पर चलने से हमारा अहित होगा । इसका सदा ध्यान रखना चाहिये । जिस तरह अपने चारो तरफ दावानल जल रहा हो उस समय कैसा अनुभव होता है । उसी तरह संसार व्यवहार में रहते हुये मोक्ष के प्रति जागरुक रहने से अपना लक्ष्य प्राप्त हो सकेगा । जागरुक व्यक्ति के लिये संसार दावानल की तरह लगने लगता है । ऐसे व्यक्ति को ही सच्चा मुमुक्षु कहा जा सकता है । बीता हुआ समय करोड़ो रुपये खर्च करने परभी वापस नहीं आता । इसलिये समय की महत्ता समझकर काल कब ग्रास कर जायेगा सावधान होकर प्रभु की भजन में मन लगाना चाहिये । इस वात के अनुसन्धान में सुन्दर दृष्टांत राजा जनक का है । राजा जनक को एकबार मिलने के लिये एक साथ बहुत सारे ऋषि महात्मा आये । राजा जनक सभी को एक साथ मिलते है, बाद में सभी से अलग-अलग मिलते हैं । इस दृश्य को देखकर एक महात्मा ने पूछा कि आप ऐसा क्यो करते हैं ? जब आप को सभी से अलग-अलग मिलना था तो एक साथ क्यों मिले ? यह सुनकर राजा जनक ने कहा कि एक घड़ी के बाद क्या होना है यह किसे पता । एक घड़ी के बाद मेरी मृत्यु हो जाती तो ? इसलिये हम सभी के साथ प्रथम मिल लिये । आने वाले कल का क्या भरोसा ? इसी तरह हमें भी वर्तमान में जितना संभव हो प्रभु स्मरण करके मोक्ष के लिये सतत प्रयत्नशील रहना चाहिये । इसलिये भगवान की कथा में जितनी प्रीति हो उतनी ही जगत में अभाव आता जायेगा । जिस में श्रवण भक्ति हो उसमें प्रेम लक्षणा पर्यन्त सभी भक्ति का अंग प्राप्त हो जायेगा ।

''रात दिवस रहे एवुं ध्यान-मने केम मले भगवान ।
मेली गमतुं निज मननुं रहे हरि आज्ञा अनुसार,
साचु मुमुक्षु ए मानवो निश्चय करी निरधार ॥''

भक्तिसुधा

•

संत समागम

- सां.यो. कोकिलाबहन (सुरेन्द्रनगर)

स्वामिनारायण भगवान हमें मिले हैं । उनकी भजन भक्ति करलेनी चाहिये । इससे जीवन में अच्छा होगा । इस संसार में कोई किसी का नहीं है । इसलिये प्रभु की भजन करनी चाहिये । कभी पाप नहीं करना । शरीर क्षण भंगुर है । माया के प्रपंच में सभी फंसे हुये है, इसे मात्र भगवान ही दूर कर सकते हैं । भजन भक्ति में व्यसन बाधक होता है । जगत के सभी व्यसन भजन भक्ति में बाधक है । प्रभु को जो पहचान गये हैं वे भव सागर से पार हो जाते हैं । हमें स्वामिनारायण भगवान मिले हैं उन्हें ही प्रसन्न रखकर भवसागर से पार होना है । वे ही अपने धाम में ले जायेंगे ।

अक्षरधाम के अधिपति दया करके एक दिन हमारा अवश्य कल्याण करेंगे । संतो का जिन्होंने सत्संग किया उनका बेड़ा पार ।

एक समय सुराखाचर, सोमला खाचर, अलैया खाचर इत्यादि काठी दरबारो ने साधुओं की सभा में गोपालानंद स्वामी से पूछा कि स्वामीजी आपके संतो की तरह हम गृहस्थों का कल्याण होगा क्या ? स्वामी ने कहा हम साधुओं की तरह आप सभी का कल्याण होगा। जिस तरह नापित का हुआ था। एक बार-अकाल पड़ गया। इसलिये एक दरबार अपने गाँव को छोड़कर सगें सम्बन्धियों के यहाँ चला गया। पीछे-पीछे उस गाँव का नापित भी गया।

दरबार बैठकर हुंका पी रहा था। उसी समय वह नापित दरबार के पास जाकर सलाम किया। दरबार ने पूछा अरे तूं यहाँ ? बाबू ! घर से यहाँ आपकी सेवा में आया हूं। तुम्हारे यहाँ सब ठीक तो है न ? हाँ लेकिन एक बात कहनी है। हाँ कहो। आपके बगल वाला, कुत्ता मर गया। अच्छा और कुछ। हाँ आपकी पवन के समान उड़ने वाली घोड़ी मर गयी अरे ! और आगे, आपके कुंवरजी भी मरगये और उनके वियोग में कुंवरजी की मां भी मर गयी। बाबू ! अब कोई चिंता की बात नहीं। सम्पूर्ण दरबार को लालबाई के हवाले करके आये हैं। जिस तरह उस नापित ने थोडे में बहुत कह दिया, उसी तरह हमें भी कहना है। वह यह कि जिस तरह स्त्री कों पुरुष में प्रेम रहता है, उसी तरह भगवान में प्रेम हो, सत्संग में हो, तो अवश्य साधु की तरह आपका भी कल्याण होगा। इस तरह स्वामी ने कहा, लेकिन उसकी समझ में नहीं आया।

सभा विसर्जित होने के बाद कितने संत स्वामी से कहने लगे कि स्वामी आपने यह क्या कहा ? अपने जैसा इनका कल्याण होगा। जो संसार के विषय में अनुरक्त है। तथा आप सभी विषय से विमुख है दोनो की समानता कैसे संभव है। संत समामग से सब कुछ संभव है। मुक्ति भी संभव है। संत समागम कीजे हो, निशदिन संत समागम कीजे। इसी में अपना कल्याण छिपा हुआ है।

•

माला की महिमा

- पटेल रेखाबहन कीर्तिकुमार (ऊंझा)

जिस तरह मछली पानी के बिना नहीं रह सकती। चकोर पक्षी चन्द्र दर्शन के विना नहीं रह सकता। टिट्टिभ जिस तरह दीपक के बिना नहीं रह सकता, इसी तरह आस्तिक मनुष्य इश्वर की उपासना के बिना नहीं रह सकता। जो तारे उसी को मंत्र कहते हैं। मंत्रजप से भगवान की प्राप्ति होती है।

माला फेरने से, मंत्र जपने से शारीरिक आरोग्यता रहती है। यश-कीर्ति मिलती है। अन्दर तथा बाहर के शत्रुओं का नाश होता। सुख-शांति मिलती है। अंतःकरण पवित्र होता है। आत्मा का श्रेय तो निश्चित है। लेकिन मंत्र जपते समय मूर्ति में एकमात्र चित्त रहना चाहिये। गुरुने जिस मंत्र का उपदेश किया हो उसी का जप करना चाहिये। जिस तरह पानी को ऊपर चढाने के लिये मोटर पंप की जरुरत पड़ती है, ठीक इसी तरह प्रभु को पाने के लिये मंत्रजप की जरुरत पड़ती है।

माला में १०८ मनका होता है। यदि माला न हो तो कितने लोग करमाला का उपयोग करते हैं।

अधूरे माला से जप नहीं करना चाहिये, टूटे माला से; पुरानी माला से, गंदे धागेवाली माला से, जप नहीं करना चाहिये। माला को अंगुठे से सरकाने चाहिये अनामिका पर रखकर मध्यमा के सहारे से जपना उत्तम है। गोमुखी में रखकर जपना ठीक है। कोई देखे न इसका भी ध्यान रहे।

जमीन पर नहीं रखना चाहिये। पैर से स्पर्श न हो। माला फेरते समय शरीर हिलाना ठीक नहीं पैर पर नहीं रखना चाहिये। माला यत्र तत्र नहीं रखनी चाहिये। माला पूर्ण होने के बाद आंख से लगाकर भगवान के पास रखनी चाहिये। माला फेरते समय इष्टदेव का सतत ध्यान होता रहे यह आवश्यक है। इससे चित्तवृत्ति का शोधन होता है। ईश्वर के साथ तन्मयता हो जाती है। शांत चित्त, स्वस्थ चित्त से प्रभु की माला फेरनी चाहिये अपनी माला दूसरे को नहीं देनी चाहिये। इसी तरह दूसरे की माला भी नहीं लेनी चाहिये। तुलसी की माला, चंदन की माला, स्फटिक की माला, रुद्राक्ष की माला श्रेष्ठ बताई गयी।

........प्रश्नपेटी........

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर, जेतलपुर)

प्र.१ "ध्यान किसका करें ? शिक्षापत्री में कहाँ लिखा है ?"

प्र.२ "जे आत्म निष्ठहोय तेने अंत समे केटली सहाय करे छे ?" यह प्रश्न किस वचनामृत में कौन पूछा है ?

प्र.३ पंचाला के झीणाभाई विमार हुये उस समय श्रीजी महाराज गढपुर से दर्शन देने गये और कहे कि हठीसिंहजी के लिये कुछ कहना हो तो मुझसे कहिये ? उस समय झीणाभाई ने महाराज से क्या कहा ?

प्र.४ लोज में अनाज का सदाव्रत चलता था । उस समय महाराज ने अगत्राई के पर्वतभाई से कहे कि सदाव्रत चलाने में अन्न की कमी हो रही है, उस समय पर्वतभाई घर आकर जितना भी घर में अन्न था सभी लोज भेंज दिये, तब महाराजने पूछा कि कुछ बच्चों के लिये रखे या सभी भेंज दिये ? उस समय पर्वतभाई ने क्या उत्तर दिया ।

प्र.५ वहेलाल जेसिंहभाई के भवन में श्रीजी महाराजने १९८२ फाल्गुन कृष्ण-२ को पांच संतो की चोटी काटकर भागवती दीक्षा देकर प्रशंसा के साथ कहे कि "दाम वाम से दूर रहना, मूर्ति पूजा को ध्यान में रखना, उन पांच संतो के नाम बताइये ?"

प्र.६ निलाखा गाँव के मुंजासुर को मदिरा, मांस इत्यादि दुराचार का परित्याग कराकर सत्संगी बनाने वाले कौन संत थे ?

प्र.७ सात द्वीप कहे गये है उसमें से जम्बू द्वीप के नव खंड है, बाकी के नाम बताईये ?

फरवरी मास २०१० महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर

(१) ग.प्र. ७३ मुक्तानंद स्वामी के प्रश्न का उत्तर देते हुये श्रीहरि कहते हैं कि भगवान का दर्शन तथा कथा होती हो तो ते समे पोते न होय तो मनमां दाझ थाय अने भगवानन्नी आज्ञा थको पाळे ने मन न आप्युं होय तेने तो उपदेश करतां पण बीक लागे । (२) देवशी भगत बेटा-बहु के लिये बनवाये गये नये गहनो को तथा पत्नी के पुराने गहनों को बेचकर मंदिर बनाये थे । (३) दुःख का मुख्य कारण अज्ञान या नासमझ है । (४) हाँ मेरे पास बहुत सारी वशीकरण विद्या है क्षमा, सत्य, अहिंसा, त्याग तथा प्रभु की भक्ति इत्यादि अनेकों विद्या हैं । इस विद्या से मनुष्य वश में होता है । (५) "श्री वासुदेव विमलामृत धाम वासम्" के ११ श्लोक की स्तुति करते हैं । गढडा में निंब वृक्ष के नीचे सभा किये थे । (६) त्याग न टके रे वैराग्य विना, करे कोटि उपायजी अंतर उंडी जे इच्छा रहे, ते तो केम तजायजी । (७) हृदय में रहते हैं, अणुजितना सूक्ष्म है, चैतन्यरुप है, अपनी ज्ञान शक्ति से समग्रदेह में व्याप्त है, अछेद्य, अभेद्य, अजर, अमर इत्यादि जीव के लक्षण हैं ।

१. स.गु.शा. घनश्यामप्रकाशदासजी - जमीयतपुरा
२. अरविंदाबहन एन. भावसार
३. सां.यो. भारतीबा, मंजुबा - कालुपुर हवेली
४. वीणाबहन आर. भावसर
५. हसुमतीबहन ठक्कर - इसनपुर
६. कंचनबहन बाबूभाई पटेल - मूली
७. सां.यो. कोकिलाबा, उषाबा - सुरेन्द्रनगर
८. सां.यो. रजनबा, रेखाबा - बालासिनोर
९. सां.यो. शिल्पाबा शीतलबा - कालुपुर हवेली
१०. विनोद पी. पटेल - वहेलालवाला
११. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
१२. पटेल शिल्पाबा मणीलाल - दहेगांव
१३. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - नांदोल
१४. पटेल गोरधनभाई शंकरलाल - सोजा
१५. पटेल विष्णुभाई जीवाभाई - सीतापुर
१६. साकरबहन नटवरलाल पटेल - नांदोल
१७. भक्तिभाई भोलाभाई - राणीप
१८. ज्योत्सनाबहन राजूभाई पटेल - आनदंपुरा कडी
१९. गंगाबहन भक्तिभाई - झुलासण
२०. सां.यो. अल्पाबहन - गढपुर
२१. अमृतलाल के. मोदी - सोजा
२२. विश्वजीतसिंह राओल - इसनपुर
२३. साधु गोपालजीवनदास -संस्कृतपाठशाला जेतलपुर
२४. साधु भक्तिवल्लभदास -संस्कृतपाठशाला जेतलपुर
२५. पार्षद भाविक भगत -संस्कृतपाठशाला जेतलपुर
२६. साधु आनंदजीवनदास - हरिद्वार
२७. सोनी रक्षाबहन घनश्यामभाई - अहमदाबाद
२८. विठ्ठलपरा अमरशीभाई - नवसारी
२९. पटेल शारदाबहन कांतिभाई - नांदोल
३०. सोनी वर्षाबहन ए. - अहमदाबाद

सत्संग समाचार

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का १८८ वाँ पाटोत्सव धामधूम से मनाया गया

सर्वोपरि श्रीहरिने संप्रदाय में सबसे पहले श्रीनगर अहमदाबाद में भव्य तीन शिखर वाला मंदिर निर्माण करवाके स्वस्वरुप श्री नरनारायणदेवको प्रतिष्ठित किया था । जिसका १८८ वाँ पाटोत्सव अहमदाबाद मंदिर में धामधूम से मनाया गया था ।

सुबह के ६-३० से ७-०० पर्यन्त श्री नरनारायणादि देवोका षोडशोपचार महाभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से धामधूमसे संपन्न हुआ । इस प्रसंगका दर्शन करने के लिये शहर, गाँवो से और देशविदेश के हजारो हरिभक्त उमटे हुये थे । इन्टरनेट पर लाईव टेलीकास्ट, टी.पी. केमेरेमें दर्शन होता था । लेकिन दर्शन करने के लिये पडापडी हुई थी । पूरे मंदिर में पैर रखने की जगह नहीं थी । अभिषेक के बाद श्रृंगार आरती अपने हाथ से उतारकर अलौकिक दर्शन का लाभ दिये थे । उस के बाद श्रीहरि के तीन अपर स्वरुप सभा में बिराजमान हुये थे । बिराजमान होने के बाद पाटोत्सव के यजमान मांडवीकच्छ के (अभी लंडन) प.भ. नारायणभाई उनके पुत्र प.भ. अशोकभाई उनके चि. हरिन्द्र आदि परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री का प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन भेट धरके आरती उतारकर आशीर्वाद लिये थे। प्रासंगिक सभा में सबसे पहले अमदाबाद मंदिर के विद्वान महंत पू.शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजीने सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के माहात्म्य के साथ प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम अगले शाल फाल्गुन शुक्ल तृतीया सं. २०६७ को धामधूम और भव्याति भव्य ढंग से मनाया जायेगा । उसमें सबको तन, मन और धन से सेवा करने के लिये विशेष सूचन किया था । और यजमान परिवार की सेवा की प्रशंसा किये थे । अन्य संतोमे से पू. शा. स्वामी निर्गुणदासजी, पू. शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, मूली के स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी, भुज के संत, शा. नाना पी.पी. स्वामी, रघुवीर स्वामी आदि संतोने श्री नरनारायणदेव के महत्व के साथ श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उद्‌घाटन और उसके निर्माण की स्थिति बतलाई थी । यजमान परिवार प.भ. अशोकभाई और उनके पिताश्रीने भी अलौकिक सेवा के लिये अपनी भावनाओ का दर्शन करवाया था । लंडन के अंग्रेज सांसद टोनी मेकनहरीने भी अंग्रेजीमें वक्तव्य दिये थे । प.पू. महाराजश्री का और धर्मवंशी परिवार का दर्शन करके धन्यभागी मानने लगे थे । उन्होंने अपने वक्तव्यमें कहा कि इस प्रसंग से अपने अहमदाबाद मंदिर से प.पू. आचार्य महाराजश्री कि आज्ञा से प्रकाशित अंग्रेजी में शिक्षापत्री भाष्य (अर्थदीपीका) जिसका अनुवाद लंडन मंदिर के हरिभक्त श्री जेठालाल सवाणीने किया है । उसका विमोचन प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से हुआ था । पुस्तक में सेवा देनेवाले प.भ. ननजीभाई मेघजीभाई हीराणी परिवार और अनुवादकश्री जेठालाल सवाणी को प.पू. लालजी महाराजश्री हार पहनाकर सन्मानीत करके आशीर्वाद दिये थे ।

सभा का सुंदर संचालन विद्वान कथाकार शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने बहुतही विद्वतापूर्ण और मननीय रीत से संभालकर सबके दिल और मन को जीत लिया था । अन्त में पूरी सभा को प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री (यह आशीर्वाद अंक में प्रकाशित किया है।) आशीर्वाद दिये थे । कथा की पूर्णाहुति के बाद में धर्मवंशी परिवार अन्नकूट आरती करने के लिये पधारे थे । इस पाटोत्सव के प्रसंग पर पू. महंत स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन से कोठारी पार्षद दिगंबर भगत, राजेश्वरानंदजी, जे. के. स्वामी, भंडारी सूर्यप्रकाशदासजी, बलदेव स्वामी, योगी स्वामी, मुनि स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी आदि संत मंडल और हरिभक्तोने खडे पैर सेवा की थी ।

– दिव्यप्रकाशदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट का १४ वाँ पाटोत्सव धामधूम से मनाया गया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नाना पी.पी. स्वामी) की प्रेरणा से अलौकिक तीर्थभूमि श्रीहरि की प्रसादी के अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में माधकृष्ण पंचमी दि. ३-२-२०१० के रोज भव्य महामंदिर में सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज, श्री धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराजका षोडशोपचार पाटोत्सव महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से वेदविधिअनुसार धामधूम से संपन्न हुआ । इसके बाद अन्नकूट दर्शन और सुंदर सभा हुई थी ।

पाटोत्सव के यजमान प.भ. अंबालालभाई जोईताराम पटेल (माणसावाले) परिवारने सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्जन आरती उतारकर आशीर्वाद लिये थे । उसके बाद धामोधाम के संतोने प्रेरणात्मक आशीर्वाद दिये थे । अन्त में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये थे । हजारो हरिभक्त दर्शन करके प्रसाद लेकर आनंदित होकर धन्य धन्य हुए थे । – शा. अभयप्रकाशदास, नारायणघाट

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा का पहला वार्षिक पाटोत्सव ३१ जनवरी

उत्तर गुजरात के शिरमौर्य महेसाणा शहेर में हाईवे के ऊपर नूतन नव्य भव्य महामंदिर में बिराजमान सर्वावतारी श्री घनश्याम महाराज तथा श्री नरनारायण भगवान, श्री राधाकृष्ण भगवान आदि स्वरुप की मूर्तियो की प्राण प्रतिष्ठा हुए एक साल पूर्ण होते

पहली वार्षिक पाटोत्सव धामधूम से मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव की स्मृति करवादे ऐसा मनाया गया था । दि. २८/२९/३०/३१ दरम्यान हरियाग तथा वचनामृत की रात्री कथा रखने में आयी थी । महेसाणा शहर और आसपास के सभी गाँवो के हरिभक्त कथा सुनने के लिये आते थे । पारायण के वक्ता शास्त्री पी.पी. स्वामीने (जेतलपुर) अपनी अनोखी शैली में श्रीजी महाराज के प्रसादि के वचनोका भक्तोको रस पान करवाया था । दि. ३१ जनवरी २०१० को पाटोत्सव के दिन ठाकोरजीका महाभिषेक अन्नकूट, महापूजा, यज्ञकी पूर्णाहुति और सत्संग सभा में दंढाव्य प्रदेश के हजारो हरिभक्त तथा विविधगाँव से भी हरिभक्त आये थे । प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से महाभिषेक आदि कार्यक्रम हुये थे । भव्य आयोजन और संतो हरिभक्तों की बडी संख्या में उत्साह देखकर प.पू. आचार्य महाराजश्री बहुत ही खुश हुए थे । पहले पाटोत्सव की सेवा श्री नरनारायणदेव देश स्कीम कमिटी के सभ्य प.भ. गणपतभाई काशीराम पटेल (जी. के. पटेल) विमल पेईन्टस मोटपवाला (महेसाणा)ने की थी । महंत स्वामी शास्त्री उत्तमप्रियदासजी एवं महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजीने एक साल में मंदिर की बहुत ही अच्छी प्रगति और सत्संग का प्रचार किया इसलिये प.पू. आचार्य महाराजश्री बहुत खुश हुये । इस प्रसंग में जेतलपुर, अहमदाबाद, मूली इत्यादि धामो से संत पधारे थे ।

– शास्त्री हरिवल्लभदास, महेसाणा

श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा (अहमदाबाद) तृतीय पाटोत्सव धामधूम से मनाया गया

श्री नरनारायणदेव ताबाके पालडी-वासणा के हार्दसमान श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा का तृतीय पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से धामधूम से मनाया गया ।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में दि. २५-१-२०१० से २९-१-२०१० दरम्यान श्रीमद् सत्संगिजीवन का पंचान्ह पारायण, द्विदिनात्मक होमात्मक यज्ञ का सुंदर आयोजन हुआ था । कथा पारायण के वक्ता पू. ध्यानी स्वामी के शिष्य पुराणी स्वामी न्यालकरणदासजीने सचित्र कथामृत पान करवाया था । कथा में आने वाले उत्सव धामधूम से आयोजित हुये ।

दि. २९-१-२०१० को सुबह के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकोरजी का महाभिषेक षोडशोपचार पूर्वक वेद विधिसे संपन्न हुआ । देश विदेश के हजारो भक्तजन कथा और देवदर्शन तथा आचार्य महाराजश्री का दर्शन करके धन्य बने थे । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अन्नकूट आरती उतारी और यज्ञ कथाकी पूर्णाहुति करवाई थी । उसके बाद में सभा में यजमानश्री जीतुभाई श्री दिलीपभाई, श्री महेन्द्रभाई ठक्कर श्री किन्नरभाई पटेल और श्री चन्दुभाई सोनीने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन करके आरती उतारकर आशीर्वाद लिये थे । धामोधाम के संतो की अमृतवाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सबको आशीर्वाद दिये थे । इस प्रसंग में पू. ध्यानी स्वामी रचित दुर्लभ मानुस देहो व्यसन नाटक का कणभा गुरुकुल के बालकोने सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया था ।

– वासणा सत्संग समाज

प.पू. बडे महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण मे अविरत सेवा के नियमधारी

प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने जब से श्रीहरि की अलौकिक प्रसादीके दिव्य वस्तुओका श्री स्वामिनारायण म्युझियम का संकल्प किया तब से सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव और धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री मे अड़िग निष्ठा के व्रतधारियोंने जब तक श्री स्वामिनारायण म्युझियम पूर्ण न हो तब तक अविरत सेवा करने का नियम लिया है । सर्वोपरि श्रीहरि के समयकाल में अनेक भक्त सेवा मे जुडे थे । श्री नरनारायणदेव के मंदिर के प्रारंभमें बोटाद के मंगा दोशीने उस समय रु. १०,००० की सेवा अपने एजन्ट के मारफत करवायी और जब तक मंदिर पूर्ण न हो तब तक सेवा की । यह इतिहास के साथ श्रीहरि के छठ्ठे वंशज के लिये अनेक निष्ठावान सेवा करने के लिये कुरबान हो रहे है । एक सुंदर उदाहरण देखते ही ख्याल आयेगा । श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान प.भ. पूनमभाई मगनभाई पटेल (अहमदाबाद म्युनिसिपल) कोर्पोरेशन मे से ८४ की साल में निवृत हुए है । ये कोई लखपति या करोडपति नही है तो भी उन्होंने अपनी बचत मे से आजतक रु. १०,००,००० दश लाख श्री स्वामिनारायण म्युझियम मे प.पू. बड़े महाराजश्री के चरणों में अर्पण किया है । और अभी भी कर रहे हैं । यह श्री नरनारयणदेव के प्रति न्योछावर की भावना का अद्वितीय उदाहरण है ।

हम को भी इस में से प्रेरणा लेकर श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण की सेवा यज्ञ में सहभागी बननेका आज से नियम लेना चाहिये । ऐसा अवसर फिर कभी नहीं आयेगा ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरियावद का पांचवा पाटोत्सव २७ जनवरी

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का प्रतापगढ जिला राजस्थान मेवाडका एकमात्र महा मंदिर धरियावद में बिराजमान सर्वावतारी श्री घनश्याम महाराज तथा सांवरिया के बिहारी भगवान का पांचवा वार्षिक पाटोत्सव धामधूम से मनाया गया । छपैया मंदिर के महंत ब्रह्मचारी वासुदेवानंदजी स्वामी के मण्डलके संत मंदिर की सेवा पूजा संभाल रहे हैं । इस प्रसंग पर अहमदाबाद से प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संत मंडल सहित पधारे थे । मेवाड के उत्साही भाविक भक्तोने तीन दिन का मारुतीयज्ञ का आयोजन किया था ।

पाटोत्सव ता. २७-१-२०१० के दिन भगवान का महाभिषेक, महानैवेद्य, महापूजा इत्यादि किया गया था । पाटोत्सव के यजमान श्री नरनारायण युवक मंडल के युवक तथा प.भ. कोठारी उदयनभाई अविनाशभाई महाराजने लाभ लिया था । सभा में बडी जनमेदिनी की उपस्थिति में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था । तथा जेतलपुर से पी.पी. स्वामी तथा मूली मंदिर के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी इस प्रसंग में विशेष उपस्थित रहे । राजस्थान के आदिवासी विस्तार में संप्रदाय

का सबसे पहला मंदिर हैं। जहाँ मेवाडी भक्तोने बहुत ही सत्संग का लाभ उठाया है। - शास्त्री हरिस्वरुपानंदजी

ईडर श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धूनमें संत हरिभक्तोने और विद्यार्थियोंने महायज्ञ किया था। महंत स्वामी की प्रेरणा से मणीयोर, उमेदगढ, सचोदर और अरोडा में भी धनुर्मास धून और शाकोत्सव मनाया गया था। हरिभक्तोने बडी संख्या में लाभ उठाया था। हिंमतनगर के महंत स्वामी शा. हरिजीवनदासने प्रेरणादायी प्रवचन किया था।

- साधु सत्यसंकल्पदास, ईडर

हिंमतनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. हरिजीवनदासजी की प्रेरणा से धनुर्मास में प्रातः महामंत्र धून बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के सानिध्य में हुई थी। स्वामी ने यमदंड की कथा की थी। पुजारी स्वा. अजयप्रकाशदासजीने भगवान का सुंदर श्रृंगार किया था।

यहाँ के भोलेश्वर महादेव में महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजीने तथा हरिजीवनदासजी की प्रेरणा से शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर महंत स्वामी पुजारी स्वामी तथा सत्य संकल्पदासने शाकोत्सव की सुंदर महिमा समझायी थी। इसके यजमान अ.नि. स्वीटुबहन गोविंदभाई मिस्त्री परिवार थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी।

- शंकरभाई एम. पटेल

भीमपुरा मंदिर द्वितीय पाटोत्सव तथा पंचदिनात्मक धीरजाख्यान पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से भीमपुरा में बिराजमान रामश्याम तथा घनश्याम महाराज का दूसरा पाटोत्सव तथा पंचदिनात्मक धीरजाख्यान पारायण दि. २५-१-२०१० से २९-१-२०१० पर्यन्त संपन्न हुई।

स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजीने (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्ता पद पर रहकर संगीतमय शैली में कथामृत पान करवाया था।

दि. २९-१-२०१० को पारायण की पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। मंदिरमें ठाकुरजी की आरती उतार कर सभा में पधारकर व्यासपीठ की आरती उतारकर कथा की पूर्णाहुति किये थे। तथा समस्त हरिभक्तो को आशीर्वाद दिए थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री भी इस अवसर पर पधारे थे और दर्शन आशीर्वाद दिये थे। रात्रि कथा में नजदीक के गाँव के कई हरिभक्तों ने लाभ लिया था। पाटोत्सव तथा पारायण के मुख्य यजमान अ.नि. हेमाभाई रणछोडभाई चौधरी परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन कर दिव्य लाभ प्राप्त किया था। युवक मंडल ने सुंदर कार्यक्रम किया था। संतोने ठाकुरजी को प्रत्येक घर में पदार्पण करवाया था। इस अवसर पर समूह आरती, संप्रदाय का साहित्य प्रचार, व्यसनमुक्ति अभियान इत्यादि कार्यक्रम संपन्न हुए थे। कई राजनैतिक व्यक्ति भी उपस्थित रहे थे। प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम में श्री भरतभाई डी. चौधरी, श्री विष्णुभाई चौधरी तथा गायत्री परिवार (माणसा) आदि भक्तोने सेवा कर प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त की थी।

अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, ब्र. पू. राजेश्वरानंदजी आदि अनेक दाम से पधारे थे तथा आशीर्वचन दिये थे। - शा. चैतन्यस्वरुपदास, कोटेश्वर गुरुकुल

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल छठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव १८ फरवरी

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय में सुप्रसिद्ध शिखरबद्ध हरिमंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज आदि स्वरुपका छठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संपन्न हुआ था। प.भ. ईश्वरभाई उमेदभाई पटेल परिवारने यजमानपद की सेवा प्राप्त की थी।

इस अवसर पर जेतलपुर धाम से पू. पी.पी. स्वामी तथा संतमंडल, कांकरिया मंदिर से महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी, मथुरा मंदिरके महंत शास्त्री आनंदप्रसाददासजी पधारे थे। महापूजा, महाअभिषेक, सत्संग सभा आदि कार्यक्रम धामधूम से मनाये गये। कई हरिभक्त लाभ लेने हेतु बाहर से पधारे थे। मंदिर के कोठारी प.भ. दासकाकाने सुंदर व्यवस्थाकी थी।

- चिमनभाई पी. पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडथलका तीसरा पाटोत्सव (२२ जनवरी)

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान अनेको बार इस भूमि पर पधारकर अति पावन किये है। इस गाँव के मंदिर मे बिराजमान चित्रावतार श्री स्वामिनारायण भगवानके तीसरे वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्यश्री की आज्ञा से जेतलपुरधाम के पू. पी.पी. स्वामी और संत मंडल पधारकर श्री हरिकृष्ण महाराज का पंचामृत महाभिषेक कर अन्नकूट तथा आरती उतारकर अलौकिक लाभ दिया था।

गाँव के हरिभक्तो की उपस्थिति में सभा में संतजनोने सत्संग को बढावा दे एसी कथा कर भक्तो को प्रसन्न किया था। मंदिर के कोठारी प.भ. हरिकृष्णभाई अंबालाल पटेलने सुंदर व्यवस्था की थी। समस्त हरिभक्त कथावार्ता, दर्शन तथा प्रसाद लेकर धन्य हुए थे। - जगदीश अंबालाल पटेल

मेडा गाँव में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री की आज्ञा आशीर्वाद से सां.योगी कंचनबा तथा कुंदनबा के यजमान पद पर दि. १-२-२०१० से दि.

७-२-२०१० पर्यन्त श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण शा.स्वा. कृष्णस्वरुपदासजी गुरु स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी के वक्तापद पर धामधूम पूर्वक हुई थी। समस्त गाव के हरिभक्तोने लाभ लिया था। १२ घंटे की अखंड महामंत्र धून श्री हरिदासजी स्वामी की पुण्यतिथि के निमित्त रखी गई थी।

दि. २-२-२०१० को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे तथा हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे। दि. ७-२-२०१० को प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे और दोनो मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारे थे तथा श्रीफल की आहुति देकर विष्णुयाग की पूर्णाहुति किये थे। यजमान सां. कंचनबा तथा कुंदनबा की तरफसे उनके परिवारजनोने तथा गाँव के हरिभक्तोने प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन आरती कर, आशीर्वदा प्राप्त किये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने हरिभक्तो को आशीर्वाद दिया था। प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री पधारी थी। यजमान सांख्ययोगीबा तथा गाँव के समस्त बहनोने प.पू. गादीवालाश्री का पूजनअर्चन कर आरती उतार कर आशीर्वाद प्राप्त किये थे। समस्त खाखरिया के हरिभक्तोने कथा धून का दिव्य लाभ लिया था।

–सत्संग महिला मंडल

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वणझर में दिव्य शाकोत्सव

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में दि. ७-२-२०१० को शाम को प.पू. बड़े महाराजश्री के करकमलो से शाकोत्सव धामधूम से मनाया गया। श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक वेदविधिपूर्वक हुआ था।

प्रासंगिक सभा में स्वामीने प.पू. बड़े महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत किया था। पश्चात प.भ. अरविंदभाई ठक्करने प्रेरणादायी उद्बोदन कर उत्साह बढाया था। स्वामीने श्री स्वामिनारायण म्युझियम की सुंदर जानकारी सभा में दी थी। प.भ. राजुभाई ठक्करने श्री स्वामिनारायण म्युझियम में रु. ११,००० प.पू. बड़े महाराजश्री को अर्पण किया था। यजमानश्री राजुभाई, प्रकाशभाई, नीतिनभाई और कोठारी आदि हरिभक्तोने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन आरती कर आशीर्वाद प्राप्त किये थे। अंत में समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्री आशीर्वाद दिये थे। सभा संचालन शा. स्वामी पूर्णप्रकाशदासजीने किया था। हरिभक्त बड़ी स्ख्या में उपस्थित होकर शाकोत्सव का लाभ लिये थे।

– रमणभाई कोठारी

इडर देश के लालोडा गाँव में श्रीमद् भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ

परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से लालोडा मंदिर के प्रणेता स्वा. घनश्यामजीवनदासजी की प्रेरणा से तथा उन्हीं के शिष्य विश्वप्रकाशदासजी एवं बालकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में गं.स्व. पुंजाबहन माधाभाई पटेल के शुभ संकल्प से ता. २-२-१० से ८-२-१० तक श्रीमद् भागवत सप्ताह का ज्ञानयज्ञ स्वा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुरधाम) के वक्तापद पर आयोजित हुआ था। संहितापाठ में स्वा. भक्तिवल्लभदासजी थे। समस्त गाँव के हरिभक्त तथा अगलबगल के गाँव के हरिभक्त कथामृत का पान किये थे।

पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। मंदिर में ठाकोरजी की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुये थे। पू. स्वा. घनश्यामजीवनदासजी तथा यजमान परिवार के पटेल करशनभाई, रेवाभाई, पटेल शांकाभाई कालाभाई, पटेल लीलाधरभाई इत्यादि यजमान परिवार की तरफ से प.पू. आचार्य महाराज पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे। सभा में स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर), अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, मूली के महंत स्वामी इत्यादि संत प्रेरक प्रवचन किये थे। अंत में सभा को पू. महाराजश्री ने आशीवर्चन दिया था। इस सभा का संचालन वासुदेव स्वामीने किया था। नाथद्वारा के महंत स्वामी, नीलकंठ स्वामी इत्यादि संत सेवा में लगे रहे। पूर्णाहुति के दिन ८००० हरिभक्तोंने प्रसाद ग्रहण किया था।

– साधु बालकृष्णदास, लालोडा

श्रीहरि के प्रसादी भूत आदरज गाँव में नूतन हरि मंदिरका खात मुहूर्त

संप्रदाय में सर्व प्रथम श्रीहरिने अन्नकूटोत्सव की परम्परा आदरज गाँव से प्रारंभ की थी। सद्गुरु को उपाधिभी यहीं से प्रारंभ की थी। ऐसी महान तीर्थभूमि आदरज गाँव में प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य संकल्प से नूतन हरिमंदिर का खात पूजन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ता. ९-२-१० को संपन्न हुआ था। इस प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री का भव्याति भव्य स्वागत गांव के राजमार्ग पर करके मंदिर में लाया गया था। प.पू. महाराजश्री सर्व प्रथम मंदिर में ठाकुरजीकी आरती उतारकर मंदिर का खात पूजन करने पधारे थे। खात पूजन के यजमान श्री ईश्वरभाई मगनभाई प.पू. महाराजश्री के साथ खात पूजन में लाभ लिये थे।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. हरिकेशवदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, नारायणघाट के महंत शा. स्वा. पी.पी. स्वामी, रघुवीर स्वामी ईत्यादि संत आदरज गाँव की महिमा का गुणगान किये थे। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने खूब प्रसन्न होकर सुंदर मंदिर निर्माण हेतु हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

इस प्रसंग पर ब्र. पू. स्वा. राजेश्वरानंदजी, स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स्वा. देवप्रसाददासजी, ईडर के महंत स्वामी, जमीयतपुरा के विजय स्वामी इत्यादि करीब ३० जितने संत पधारे थे। समग्र उत्सव की व्यवस्था आदरज मंदिर के महंत रामकृष्णदासजीने की थी। दंढाव्य देश के हरिभक्त वहाँ आकर दान भेंट लिखवाये थे। – को. वरसंगजी ठाकोर

मोडासा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का १३ वाँ पाटोत्सव श्री सुभाषभाई द्वारकादास सोनी तथा श्री रसिकभाई चुनीभाई सोनी के तरफ से संपन्न हुआ था । शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी पाटोत्सव का पूजन-अभिषेक करवाये थे । हरिभक्त अपने घर से पवित्र भोजन सामग्री बनाकर लाये थे । जिसे अन्नकूट में रखा गया था। साधु सुखनंदनदास तथा नरेन्द्र भगत सेवा में थे ।
- कोठारीश्री

दहेगाँव मंदिर में सत्संग सभा - खीचडी महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के हरिक्तों के सहयोग से खिचडी का उत्सव मनाया गया था । १२०० जितने हरिभक्त लाभ लिये थे । माणसा के महंत स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी स्वा. हरिजीवनदासजी, श्रीजी स्वरुपदासजी, चैतन्य मुनि, छपैयाप्रसाददासने भगवान तथा धर्मकुल की महिमा को समझाया था । व्यवस्था में को. अरविंदभाई अमीन, हसमुखभाई पटेल, महेशभाई, विनुभाई, तरुणभाई इत्यादि हरिभक्त थे । सभा संचालन मोहनभाईने किया था ।
- कोठारीश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा विश्वस्वरुपदासजी की प्रेरणा से वसंत पंचमी को शिक्षापत्री का पूजन किया गया था । ठाकुरजी को पंचामृत से अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती की गयी थी । बाद में सम्पूर्ण शिक्षापत्री का पाठ किया गया था । शोभायात्रा का आयोजन भी किया गया था । माधशुक्ल-७ को शाकोत्सव किया गया था । बड़ी संख्या में हरिभक्ति उपस्थित होकर लाभ लिये थे ।- राकेश काछिया

साबरमती (रामनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणघाट के महंत पी.पी. स्वामी एवं शा.स्वा. रामकृष्णदासजी की प्रेरणा से सम्पूर्ण मास पर्यन्त धुन की गयी थी । ता. ३-१-१० रविवार को भव्य शाकोत्सव किया गया था, जिस में प.पू. लालजी महाराज तथा संत उपस्थित थे । यह कार्यक्रम साबरमती सत्संग समाज द्वारा सम्पन्न हुआ था ।
- रावजीभाई टी. पटेल

माणसा श्री स्वामिनारायण मंदिरमें शाकोत्सव

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. हरिकेशवदासजी की प्रेरणा, ईडर के महंत स्वामी, सोकली के रघुवीर स्वामी, टोरडा के महंत स्वामी, पुजारी परमेश्वरदासजी तथा महंत हरिजीवनदासजी इत्यादि संतो की प्रेरणा से ता. १७-१-१० को ईडर के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में भजन, कीर्तन तथा सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । बाद में भव्य शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया । गाँव के समस्त हरिभक्त लाभ लिये थे ।
- हसमुखभाई कोठारी

कलोल श्रीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर का ३१ वाँ पाटोत्सव

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर का ४१ वाँ वाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से संपन्न हुआ था । प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजीने कथामृत का पान कराया था । पाटोत्सव के यजमान श्री शिवाभाई शंकरदास पटेल तथा परिवार के सभी लोग प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारे थे। शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने सभा संचालन किया था ।

को. श्री बापूलाल ईश्वरदास पटेल, श्री लक्ष्मणभाई, जोईताराम पटेल इत्यादि हरिभक्तों ने पू. बड़े महाराजश्री का पूजन किया था । संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू. महाराजश्री हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । बहनो को दर्शन का लाभ देने हेतु गादीवालाश्री पधारी थी हरिभक्त दर्शन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किये थे ।
- बापूदासभाई कोठारी

नवावाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर का ५० वर्ष पूर्ण होते ही सुवर्ण जयंती महोत्सव ता. १९-३-१० से २५-३-१० तक धूमधाम से मनाया जायेगा । जिसके उपलक्ष्य में प्रभात फेरी, जनमंगल पाठ, वचनामृत पाठ भक्त चिंतामणी, हरिगीता, जनमंगल, इत्यादि के कार्यक्रमो का नियम भाई-बहन सभी हरिभक्तों ने लिया है । इसका प्रचार प्रसा रकरने का उत्तर दायित्व भी लिया है।
-जशुभाई चावडा

श्री नरनारायणदेव बाल सत्संग मंडल द्वारा चित्र स्पर्धा

प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव बाल सत्संग मंडल का कक्षा १ से ८ तक के छात्रों को चित्र स्पर्धा का आयोजन ता. २३-१-१० को किया गया था । यह आयोजन श्री स्वामिनारायण मदिर कालूपुर के सभा मंडप में किया गया था । जिसमें ४५ जितने बालक भाग लिये थे । स्पर्धा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले दोषी महर्षि जे. भावसार कश्यप हसमुखभाई, दोषी प्रसाद आर., पाटडिया ऋषभ मोदी हर्षिल, सोनी ओम नितेशकुमार इत्यादिने भाग लिया था। सभी को प.पू. लालजी महाराजश्री हार्दिक आशीर्वाद देते हैं ।- संचालक गोपालभाई मोदी

श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगढ (ईडर देश)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर का १२ वाँ पाटोत्सव ता. १९-२-१० को श्री रसिकभाई मंगलदास पटेल की तरफ से मनाया गया था । शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजीने ठाकुरजी का अभिषेक करके सभा में भगवान का माहात्म्य समझाया था । स्वा. सुखनन्दनदास ने आरती की थी । प्रांतिज के महंत स्वा. संतो के साथ पधारे थे । इस प्रसंग में पा. नरेन्द्र भगत तथा प्रशांत भगत तथा युवक मंडल की सेवा प्रेरणा रुप थी ।
- जशुभाई पटेल

मेऊश्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर का १८ वाँ पाटोत्सव श्री रमेशभाई रसिकलाल भावसार तथा

घनश्यामभाई रसिकलाल भावसार की तरफ से सम्पन्न हुआ । १०८ लोग समूह महापूजा में भाग लिये । ठाकुरजी का अभिषेक स्वा. अखिलेश्वरदासजीने किया । स्वामीने प्रसंगोचित व्याख्यान करके यजमान परिवार की प्रशंसा किये ।

इस प्रसंग पर सुखनंदनदास, नरेन्द्रभगत, प्रशांत भगत तथा श्री नरनारायण युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी । को. श्री रामाजी की सम्पूर्ण सहयोग था। – नरेन्द्र भगत

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

मोरबी श्री स्वामिनारायण मंदिर (दरबार गढ के पास)

यहाँ के मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धनुर्मास में धुन-कीर्तन तथा निष्कुलानंद काव्य पठन शा.धर्मजीवनदासजीके वक्ता पद पर हुआ था । आबाल वृद्ध नरनारी सभी हरिभक्त कथा सुनने आते थे । धनुर्मास की पूर्णाहुति के प्रसंग पर शाकोत्सव मनाया गया था । इस प्रसंग पर स्वा. भक्तिहरिदासजी तथा सूर्यप्रकाशदासजी ने कथा का सुंदर लाभ दिया था । बहनो के मंदिर में सां.यो. राजकुंवरबा तथा सां.यो. उषाबा की प्रेरणा से धनुर्मास धूमधाम से मनाया गया था ।

– प्राणजीभाई

पाटडी श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २२-१-१० से ता. २६-१-१० तक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण शा. स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (नाराणपुरा) तथा शा.स्वा. सत्यसंकल्पदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ ।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । सर्व प्रथम मंदिर में पाटोत्सव अभिषेक करके सभा में पधारे थे । संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को दार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस कथा का आयोजन सां.यो. शांताबा तथा हंसाबा एवं रंजनबा कीप्रेरणा से हुआ था ।

– नारायणजी तलाटी

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी पाटोत्सव महावद-३

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री हनुमानजी, श्री गणपतिजी की पुनः प्रतिष्ठा तथा २० वाँ पाटोत्सव एव श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी नूतन प्रवेश द्वार के उद्घाटन के उपलक्ष्य में ता. ३०-१-१० से ता. १-२-१० तक श्रीमद् सत्संगि भूषण त्रिदिनात्मक पारायण संप्रदाय के सुप्रसिद्ध काथाकार पू. पी.पी. स्वामी तथा शा. भक्तिनंदनदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई । कथा में सभी प्रसंग धूमधाम से मनाये गये । यहाँ पर जयेश सोनी का कीर्तन भी रखा गया था ।

ता. १-२-१० को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे, इस समय पूरे गाँव में भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी । मंदिर में पधारकर पू. महाराजश्री ने प्रथम ठाकुरजी का अभिषेक किये थे । बाद में कार्यक्रम की पूर्णाहुति हुई थी ।

प्रासंगिक सभा में मूली महंत स्वा.शा. नारायणप्रसादासजी, छपैया महंत, शा. घनश्याम स्वामी (माणसा) लीमड़ी के भक्तवत्सल स्वामी ने प्रसंगोचित व्याख्यान किया । अंत में समस्त सभा को प.पू. महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

– वंदनप्रकाशदास

विदेश सत्संग समाचार

सीडनी (ओस्ट्रेलिया I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में सीडनी श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा ता. ९-४-१० से ता. ११-४-१० तक दीन तक सत्संग युवा शिबिर का आयोजन किया गया है । देश-विदेश के हरिभक्त मंदिर के बेवसाईट पर संपर्क करें । www : swaminarayansydeny.rog

यहाँ पर प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से युवक मंडल की स्थापना की गयी है । प्रत्येक १५ दिन के बाद वाले शनिवार को अलग-अलग हरिभक्तों के यहाँ रात्रि में ८-३० बजे से ५-३० तक सत्संग सभा का आयोजन होता है । प्रत्येक पूनम को पेरामेटा से अपने मंदिर तक (१५ कि.मी.) की पद यात्रा में युवावर्ग जुड़ते हैं ।

ता. २०-१२-०९ को तथा १७-१२-०९ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से भुज मंदिर के संत लक्ष्मीप्रसाददास साधु विष्णुवल्लभदासजी, साधु भक्तिविहारीदास तथा श्रीजीनंदन स्वामीने कथा एवं कीर्तन इत्यादि का सुन्दर लाभ दिया था । यह सभा श्री दिलीपभाई दरजी की तरफ से हुई थी ।

ता. ३१-१-१० को मंदिर में भव्य शाकोत्सव किया गया था । श्रीव्रजमारु तथा श्री चन्द्रकान्त पटेल की तरफ से सभा हुई थी । यहाँ के सभी उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं । प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग की प्रवृत्ति अच्छी चलती है । – तेजस वी. पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (I.S.S.O., U.K.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर में १२-२-१० को महाशिवरात्री के दिन श्री सिद्देश्वर महादेव की पूजा श्री धर्मेन्द्रभाई भट्ट करवाये थे । सायंकाल ६ से ८-०० बजे तक हरिभक्तों ने शिव पूजन का लाभ लिया था । इस उत्सव के मुख्य यजमान श्री तरुणभाई फरसुराम त्रिवेदी थे । हरिभक्तों ने सेवा का उत्तम लाभ लिया था । प.पू.ध.धु. आचार्य

महाराजश्री की कृपा से प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।

– किरणभाई भावसार

वोशिंग्टन डी.सी.

यहाँ १६ जनवरी की शाम को ४-४५ से ८-४५ तक मेरीलेन्ड के पेरीस होल में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में सर्व प्रथम ''मारे ओरडे पद'' से सभा का आरंभ हुआ। सभा में धुन, कथा, कीर्तन समूह में किया गया। सानहोजे चेप्टर से शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजी सेलफोन तथा माईक द्वारा कथा का लाभ दिये थे। २९ जनवरी शुक्रवार सायंकाल ७ बजे से १०-३० बजे तक मेरी लेन्ड में सत्संग सभा हुई थी। धून भजन-कीर्तन का भी आयोजन किया गया था। चेरीहील मंदिर में स्वा. विश्वप्रकाशदासजी सुन्दर कथा का लाभ दिये थे। वसंत पंचमी को शिक्षापत्री जयंती के अवसर पर पूजन अर्चन किया गया था।

प्रत्येक सभा में हरिभक्तों की संख्या खूब रहती है। प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री तता प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है।

– कनुभाई पटेल

पियोरिया (I.S.S.O. चेप्टर U.S.A.)

प.पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शिकागो के स्वा. हरिप्रसाददासजी की प्रेरणा से पियोरिया के चेप्टर में प्रति रविवार सायंकाल ६ बजे से ९ बजे तक सत्संग का आयोजन होता है। यहाँ मकर संक्रांति को तथा वसंत पंचमी को सुन्दर ढंग से उत्सव मनाया गया था। माधशुक्ल-८ को स.गु. गोपालानंद स्वामी की जन्मजयंती के निमित्त कथा का आयोजन किया गया था। यहाँ से ५० मील दूर मोलन टाउन में अपने एक हरिभक्त श्री रजनीभाई तथा उर्वशीबहन के आग्रह पर उन्हीं के यहाँ यह कार्यक्रम रखा गया था। अब वे अपनी सभा में नियमित आते हैं।

महा शिवरात्री को शिवजी का पूजन विधिपुरस्सर किया गया था। ३ वर्ष से १२ तक के १८ बालक इस सभा में नियमित आते हैं। अपना यह नूतन चेप्टर प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है।

– रमेश पटेल

कोलोनिया (I.S.S.O., U.S.A.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में २३ जनवरी की साम को स्वा. धर्मवल्लभदासजी तथा पुजारी हरिनन्दनदासजी की प्रेरणा से वसंत पंचमी को शिक्षापत्री का पूजन अर्चन किया गया था। महंत स्वामीने शिक्षापत्री का माहात्म्य समझाया था। इस प्रसंग पर पूज्य बिन्दुराजा, श्री सुव्रतकुमार, श्री सौम्यकुमार दर्शन के लिये पधारे थे। सभा में शिक्षापत्री का पाठ किया गया था। ३१ जनवरी को भव्य शाकोत्सव मनाया गया था।

अपनी सेवा संस्था द्वारा फ्री क्लु शोर्ट तथा फ्री मेडीकल चेकअप किया गया था। जिस में डॉ. जिज्ञेश शाह, धर्मिष्ठा शाह तथा सुरेश पटेलने सेवा की थी। बहुत सारे हरिभक्त लाभ लिये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

भुज-कच्छ : अ.नि.स.गु. स्वामी पतितपावनदासजी (उम्र ८० वर्ष) ता. २७-२-२०१० के दिन दोपहर १-०० बजे श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

अहमदाबाद : श्री स्वामिनारायण मंदिर के छपैयाधाम में सेवा पूजा रकते हुये ब्र. स्वा. महापुरुषानन्दजी श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

विसनगर : श्री जयंतिभाई सोमचंद्रभाई सोनी ता. १५-१-१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

माणसा : श्री नटवरलाल गिरधरलाल दरजी ता. ३१-१-१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

वसई (डाभला) : श्रीमती नयनाबहन रजनीकांत भावसार ता. १९-१२-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं। ता. १९-१-१० को दोनो पति पत्नी श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं। वसई गाँव में उनके अक्षरवास से सत्संग में बहुत बडी कमी हुई है।

जीरागढ (हालार) : प.भ. धीरजलाल तुलसीभाई श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

माणेकपुर चौधरी : प.भ. डाह्याभाई शंभुभाई चौधरीकी धर्मपत्नी प.भ. रईबहन डाह्याभाई ता. ८-१-१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) आदरज प्रसादी के मंदिर की खातविधिकरते हुये प.पू. महाराजश्री (२) लींबडी मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर खात पूजन करते हुये प महाराजश्री (३) शिकागो मंदिर में शाकोत्सव दर्शन (४) ईडर मंदिर में प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव दर्शन (५) माणेक में प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव दर्शन (६) वडझर मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव (७) उवार मंदिर (बहनोके) का खात पूजन प्रसंग पर सभा में कोठारीजी को आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री (८) अ.नि. महोबतसिंह भगत पारायण प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री को प्रसादी की पेटी अर्पण करते हुये महादेव भगत तथा वनराज भगत (९) केनेडा टोरन्टो मंदि वसंत पंचमी को सत्संगी बालक शिक्षापत्री का पूजन करते हुये (१०) महेसाणा में कशलीबाई के घर में चमत्कारीक प्रसादी की वस्तुओं अभिषेक करते हुये प.पू. महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री (११) ओकलेन्ड (न्युजीलेन्ड) मंदिर में प.पू. बड़े गादीवालाजी के पदार्पण आयोजित युवतियों का सत्संग शिबिर

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581, 9-11
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

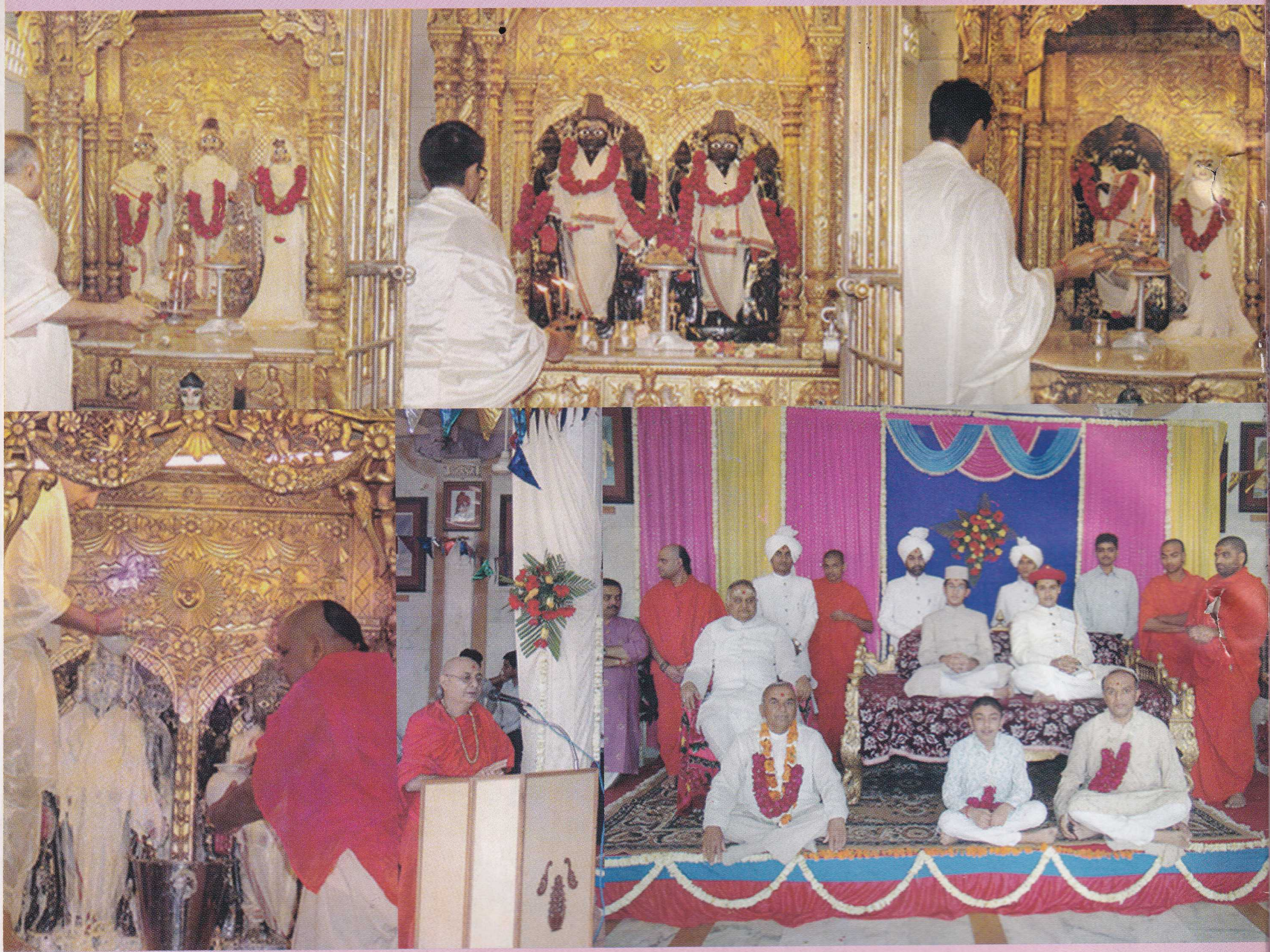

१) सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव महाभिषेक करते हुये प.पू. महाराजश्री तथा अभिषेक के बाद आरती उतारते हुये श्रीहरि के ट्ठे, सातवें, आठवें वंशज (२) पाटोत्सव प्रसंग पर प्रासंगिक सभा मं प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी हाराजश्री की शुभ उपस्थिति में पू. महंत शा.स्वा. श्रीहरि कृष्णदासजी उद्‌बोधन करते हुये तथा पाटोत्सव के यजमानश्री नारायणभाई एवं नके पुत्र श्री अशोकभाई तथा चि. हरेन्द्र (मांडवी-कच्छ)

Museum Year
March 2010 - March 2011

Shree Swaminarayan Museum

ઈ.સ. ૨૦૧૦-૧૧નું વર્ષ "મ્યુઝિયમ વર્ષ"

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ૧૦૦૮શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી માર્ચ ૨૦૧૧નું વર્ષ "મ્યુઝિયમ વર્ષ" તરીકે જાહેર કરવામાં આવે છે.

ઉદ્ઘાટન ૮મી માર્ચ ૨૦૧૧

સંવત ૨૦૬૭ ફાગણસુદ ત્રીજ શ્રી નરનારાયણ દેવનો પાટોત્સવ

www.swaminarayanmuseum.com/org

Praful Kharsani